॥ श्री ॥

हिन्दी ग्रामर अने हिन्दी शिक्षा-वली भाग १ लाना गुजराती अर्थ

(तरजुमा सह).

(हिन्दी शब्द अने धातु रुपावली साथे).

लेखक ने प्रकाशक,
मणिलाल मुळजीभाई उपाध्याय.
बुकसेलर–पेटलाद.

सन १९१८ संवत् १९७४.
प्रत २०००. आवृत्ति त्रीजी.

श्री भाग्योदय प्रीन्टींग प्रेसमां जेठालाल देवशंकर
दवेए छाप्युं. खाडीआ–अमदावाद.

किंमत रु. ०-३-६.

॥ श्री ॥

हिन्दी प्रायमर अने हिन्दी शिक्षावली
भाग १ लाना गुजराती अर्थ

(तरजुमा सह).

(हिन्दी शब्द अने धातु रूपावली साथे).

रची छपावी प्रसिद्ध करनार,

मणिलाल मूळजीभाई उपाध्याय.

बुकसेलर—पेटलाद.

सन १९१८. संवत १९७४.

प्रत २०००. आवृत्ति त्रीजी.

श्री भाग्योदय प्रिन्टिंग प्रेसमां जेठालाल देवशंकर दवेए छाप्युं.

खाडीया—**अमदावाद.**

किंमत रु. ०-३-६.

पहेली आवृत्तिनी प्रस्तावना.

वडोदरा राज्यनी केळवणी खाताए वडोदरा राज्यनी शाळाओमां उपला धोरणोमां हिन्दी भाषा शिखववानी शरुआत कराववाथी दरेक शाळामां हिन्दी प्राइमर, हिन्दी शिक्षावली भाग पहेलो तथा हिन्दी शिक्षावली भाग बीजो चलाववामां आवे छे. हिन्दी भाषाथी अपरिचित बाळकोने ए पुस्तको शीखववामां वधारे अनुकूळता थाय ए हेतुथी तेना गुजराती मीनींगनी जरुर छे एम जाणी ते तैयार करवामां आव्या छे.

हिन्दी भाषानी लिपि बालबोध—नागरी छे अने तेथी ते लिपिनो सारो परिचय थाय ए हेतुथी आ मीनींगमां बालबोध लिपिज वापरवामां आवी छे.

आशा छे के, आ मीनींग हिन्दी भाषा शिखनार विद्यार्थीओने तथा शिक्षकोने अनुक्रमे पोतानो अभ्यास करवामां तथा शिक्षण आपवामां कांइक मददकर्ता थइ पडशे तो एने माटे करेलो प्रयास सफळ थयेलो जाणी मने आनंद थशे.

त्रीजी आवृत्तिनी प्रस्तावना.

मने जणाववाने आनंद थाय छे के आ उपयोगी पुस्तकनी पहेली अने बीजी आवृत्ति टुंक समयमां खपी जवाथी आ त्रीजी आवृत्ति बहार पाडवानी जरुर पडी छे. आशा छे के प्रथम आवृत्ति माफक आ आवृत्ति पण तेटलीज उपयोगी थइ पडशे.

ता. ५—७—१९१८.
पेटलाद.

मणिलाल मूळजीभाई उपाध्याय.

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हिन्दी प्रायमरना गुजराती अर्थ.

अनार—दाडम
आदमी—माणस
इमली—आमली
ईख—शेरडी
उल्लू—घूअड
एला—इलायची
ऐनका—चश्मा
ओखली—खांडणी
औरत—स्त्री
अंडा—इंडुं
स्वरोंकी—स्वरोनी
पहचान—ओळखाण
ककड़ी—काकडी

खरगोश—ससलुं
गदहा—गधेडुं
घड़ी—घडीआळ
चमगादर—चामा-
चीडीयुं
छतरी—छत्री
जहाज़—वहाण
[illegible]—वडो
टट्टू—टट्टू; नानो घोडो
ठठेरा—कंसारो
डलिया—टोपलो
ढकना—ढांकणुं
थम—थांभलो

दवात—खडीयो
नारियल—नारियेळ
पंडुख—कबुतर
फव्वारा—फुवारो
भी—पण
मकड़ी—करोळीओ
यहूदी—याहूदीलोक
रेलगाड़ी—आगगाडी
लंगूर—वांदरो
वनमानुष—उरांगो
उटांग, वांदरो
शरीफा—सीताफल
हरिण—हरण

---

१ कोइ कोइ क्ष, त्र, (अने) ज्ञ ने पण व्यंजन माने छे.
२ पण आ बे बे अक्षरोना मळवाथी बन्या छे.

३ एथी करीने आ मळेला—जोडेला अक्षरोनी साथे लखाशे (लखवामां आवशे.)

४ क, ख, ग, ज, ड, ढ, अने फ नी नीचे मींडुं मूकवाथी तेमना बोलवामां फेर पडी जाय छे.

५ शीखवनार आ वात छोकराओने सारी रीते समजावी आप.

बींदीवाले अक्षर—मींडांवाळा अक्षर.

व्यंजनोकी पहचान—व्यंजनोनी ओळखाण.

अक्षरोंका जोड़ना—अक्षरोनुं जोडाण.

---

(१)

अब—हमणां	ईख—शेरडी	ऐब—एब, कुटेव
आग—देवता	उस—ते	ओस—झाकळ
इस—अे, आ	उख—शेरडी	और—अने

---

(२)

कल—काल	पढ़—भण	गड़—दाट
हल—हळ	रख—राख	बड़—वड
चल—चाल	पर—उपर	
झट—झट, तरत	डर—डर—बही	मत—ना
पट—लूगडूं	घर—घर	कर—कर

---

(३)

थन—स्तन	कब—क्यारे	गज—हाथी, गज
रस—रस	नस—नस	गल—गळ्य
वह—ते	फल—फळ	कह—कहे
मन—मन	सच—साचुं	बड़—वध
चख—चाख	घट—जाडुं	भर—भर; सुधी

(४)

झपट—झपाटो	नरम—पोचुं	खटक—खटको, आंच
लपट—सारी सुगंध	गरम—उन्हुं	भटक—भटकवुं [को,
नहर—नहेर	मगर—मघर	बहल—वहेल, ममत
शरम—लाज	नमक—मीटुं	महल—महेल

(५)

करवट—पासुं	पनघट—कुवा तळा-वनो कांठो	बरतन—वासण
सरपट—दोडवुं	बरगद—वड	थरथर—ध्रुजवुं
झटपट—उतावळुं	खटमल—मांकण	रपटन—कीसी जग्या
शरबत—शरवत	हलचल—हीलचाल	भरभर—भरवुं
मलमल—झीणुं लूगडुं	पलटन—पलटण, फोज	कलकल—ककळवुं

(६)

बस कर—बंध राख	छतपर चढ—छत उपर चढ	सरपट मतचल—दोडतो ना चाल
घर चल—घेर चाल	झटपट उठ—जलदी उठ	महलपर रह—महेल उपर रहे
सचसच कह—साचे साचुं कहे	इसपर रख—आ उपर राख	पहर भर जग—पहोर सुधी जाग
हठ मत कर—हठ ना कर		

बारहखड़ी—बाराक्षरी.

१ अथवा व्यंजन अने स्वरोनो मेळाप.
२ व्यंजनोनी साथे मळवाथी स्वरोनुं स्वरूप बदलाइ जाय छे.
३ जे अक्षरनुं जेवुं स्वरूप छे ते अहीं तेनी हेठे लखेलुं छे.
४ आ स्वरूपने मात्रा कहे छे.
५ स्वरोनो व्यंजनोनी साथे मेळाप.
६ पण उ नी मात्रा ज्यारे र मां लगाडवामां आवे छे त्यारे तेनुं रूप रु थइ जाय छे.
७ उ नी नीशानी र नी वचमां जाय छे. जेमके—
८ अक्षरनी उपर जे मींडु होय तेने अनुस्वार कहे छे.
९ अनुस्वारना बे रीते उच्चार थाय छे. एक पुरो, बीजा अनुनासिक साथे.
१० जेवी रीते कंठ अने हंसीमां अनुस्वारने माटे कोइ वखत आवुं चिन्ह अक्षरनी उपर बनावी दे छे.

११ कोइ अक्षरनी आगळ बे मींडांनी निशानीने विसर्ग कहे छे.

१२ विसर्गनुं काम हिन्दीमां बहु ओछुं पडे छे.

१३ जेवी रीते अमे उपर लख्युं छे तेज प्रमाणे बीजा व्यंजनोमां पण स्वरोनी निशानी लगाडवामां आवे छे.

१४ मात्राओंका लगाना—निशानीओनुं लगाडवुं.

---

(१)

कान—कान	दिल—मन	तुझ—तुं
काम—काम	दिन—दिवस	दूर—वेगळूं
छाल—छोडुं	चीज़—वस्तु	पुर—शहेर
छाप—सिक्को	चील—समडी	चूक—भूल
किस—कयो	भीड़—गरदी	चूर—मोहित थवुं,भूको
किन—कोण	तुम—तमे	चैत—चैत्र मास

(२)

सेठ—शेठ	चैन—आराम, मजाह	चोट—चोट, दाव
मेल—मेळ	कैद—केद	कौन—कोण
मेह—वरसाद	कैथ—कोठुं	कौर—कोळीयो
सेर—शहेर	मोल—किंमत	चौक—चोक

---

(३)

१ ऋ, ॠ अने लृ आ स्वर संस्कृतमांज काम आवे छे.

२ पण नीचे लखेला शब्दोनुं काम कदी कदी हिन्दीमां पण पडे छे.

३ ज्यारे कोइ अक्षरमां ऋ नी मात्रा लगाडवामां आवे छे त्यारे तेनी निशानी एवी थइ जाय छे.

ऋण—देवुं कृपा—महेरबानी

४ स्वर और व्यंजनोंका मेल—स्वर अने व्यंजनोनो मेळाप.

---

(१)

बाबा—दादा	भीख—भीख	मेल—मेळ, संप
काका—काका	चुप—छानुं	बैल—बळद
माला—माळा	चूक—भूल	कैसा—केवो
काला—काळुं	दुर—वेगळुं	कोना—खूणो
किस—कयो	चूहा—उंदर	दोना—पडीओ
जिस—जे	चूना—चूनो	कौआ—कागडो
तिर—तीर	तेल—तेल	हौआ—हाउ

---

(२)

१ पुरा सानुनासिकने माटे पुरुं मींडुं अने अर्धाने माटे अर्धु मींडुं काममां लेवामां आवे छे.

२. आ वात बाळकोने शीखवाडी देवी जोइए.

हँस—हसवुं
धँस—कळी जवुं
ढाँचा—ढांपणुं

साँचा—संचो
झंडा—झंडो

डंडा—डंडो, जाडी लाकडी

(३)

लालच—लालच
गोदना—घोचवुं
सुखाना—सुकावुं
धोबिन—धोबण
घोड़िया—बरू
सीखना—शीखवुं
मिलाप—मेळाप

पकाना—पकववुं
पढना—भणवुं
बैरागी—वेरागी, साधु
तूतिया—एक औषधी
रिझाना—राजी करवुं

खिलाना—खवरावुं
टोकरी—टोपली
पुड़िया—पडीकुं
कंगाल—गरीब
लीपना—लीपवुं
चिउंटी—कीडी

(४)

छेड़छाड—छंछेडवुं
टोपीवाला—अंग्रेज
भीड़भाड़—भीड
डुगडुगी—डांडी पीटवीः नगारी
झूटमूट—जूटुं
रेलगाडी—आगगाडी

मारपीट—मारकूट
कामकाज—काम
चौकीदार—चोकीवाळा
दोड़धूप—दोडादोड
हेलमेल—हळीमळीने
दवात—खडीयो

चूहा—उंदर
गिलहरी—खीसकोली
कलम—कलम
बिल्ली—बिलाडी
लोमड़ी—लोंकडी
तसवीरें देखो—छबीओ जुओ

(१)

नाम पढो—नाम वांचो

फल खा—फळ खा

पढ़ले—भणीले

मुँह खोल—मोढुं उघाड

सच बोल—साचुं बोल

जूठी बात—जूठी वात

कौन है—कोण छे

चैन कर—मोज कर

बीस आम—वीस केरी

मीठा दूध—मीठुं दूध

फूल तोड़—फूल तोड

नीला रंग—भुरो रंग

---

(२)

(१) फूल खीली रह्यां छे. (२) पक्षी बोली रह्युं छे.

(३) चोपडी भण्या—शीख्या करो.

(४) परोढीए उठ्या करो (उठो).

(५) तमारूं नाम बताओ. (६) वातो ना करो.

(७) मने केरी आपो. (८) हुं जीमूडुं आपीश.

(९) आ कोण आव्युं. (१०) त्यां क्यां गया.

---

(३)

(१) रघुवीर हजी सुधी सुता छे.

(२) ते दिवस सुधी (आखो दिवस) रमे छे.

(३) तेनी पासे ना जाओ.

(४) अमे कपडां पहेरी लीधां.

(५) आवो, भणवा चालीये. (६) वार ना करो.

(७) मळस्के उठवुं जोइए.

(८) उठीने मोढुं धोवुं जोइए.

(९) जूठुं कोइ वखत ना बोलो.

(१०) आवो, अमारी साथे चालो.

---

(४)

(१) मोर बोली रह्यो छे. (२) ए बागमां फर्या करे छे.

(३) ते बाग रामदासनो छे.

(४) माळी बागने पाणी पाइ रह्यो छे.

(५) आ कुवानुं पाणी खारुं छे.

(६) हुं मीठुं पाणी पीश.

(७) धूळपर ना आळोटो.

(८) आपणुं लूगडुं मेलुं न करवुं जोइए.

(९) हुं रोज सवारमां बागमां सहेल करूं छुं.

(१०) सूरज उगे घणी वार थइ.

(११) चालो, हवे घेर जइए.

(१२) हमणां पाठ मोढे करवो पडशे.

---

(५)

(१) पतंगीआंनी पाछळ ना दोडो.

(२) मा बापनुं कह्युं मानो.

(३) कोइने नठारी वात ना कहो.

(४) नठारा छोकराओनी साथे ना रमो.

(५) भणवा लखवामां मन लगाडो.

(६) कोइ वखत कोइनी साथे लडाइ ना करो.

(७) कोइने कोइ वखत गाळो ना दो.

(८) भाइबेननी साथे हेतथी बोलो.

(९) जे भणे छे ते सुख मेळवे छे.

(१०) निशाळेथी सीधा घेर आवनुं जोइए.

(११) दोडशो ना, पडी जशो.

(१२) मळेला अक्षर.

(१३) अक्षर बे जातना होय छे. एक कानावाळा; बीजा वगर कानावाळा.

(१४) पाई वाले—कानावाळा. विना पाई वाले—वगर कानवाळा.

(१५) ज्यारे कानावाळा अक्षर आगला अक्षरोनी साथे मळे छे त्यारे तेओनो कानो चाल्यो जाय छे जेमके, सब्ज–लीलुं. कुप्पा–भोटवो.

(१६) पण ज्यारे वगर कानावाळा अक्षर आगला अक्षरोनी साथे मळे छे त्यारे तेमनुं पहेलुं स्वरूप बहुधा कायम रहे छे. जेमके, लठ्ठा–दंडो, जाडी लाकडी.

(१७) पण ज्यारे वगर कानाना अक्षर य नी साथे मळे छे त्यारे य नुं स्वरूप य थइ जाय छे. जेमके, क्यारी–डांगेरना वावेतरनी जमीन.

(१८) र आगळथी पण मळे छे अने पाछळथी पण.

(१९) ज्यारे ते आगळथी मळे छे त्यारे ते आगळना अक्षरनी उपर चाल्यो जाय छे. जेमके,
बर्फ–बरफ, गर्द–धूळ.

(२०) अने र ज्यारे पाछळथी मळे छे त्यारे ते जेनाथी मळे छे तेनी नीचे चाल्यो जाय छे. जेमके,
यंत्र–संचो, प्राण–जीव.

(२१) क् ज्यारे ष मां मळे छे, त्यारे तेनुं स्वरूप क्ष थइ जाय छे. जेमके, क् + ष—क्ष, भिक्षा—भीख.

(२२) त् ज्यारे र मां मळे छे, त्यारे तेनुं स्वरूप त्र थइ जाय छे. जेमके, त् + र—त्र, खत्री—क्षत्री.

(२३) ज् ज्यारे ञ मां मळे छे, त्यारे तेनुं स्वरूप ज्ञ थइ जाय छे. जेमके, ज् + ञ—ज्ञ, ज्ञान—समजण.

दिनोंके नाम—दिवसोनां नाम.

(१) अठवाडीयाना सात वार होय छे, तेमनां नाम आ छे.

इतवार—रवीवार.	बुध—बुधवार.	शुक्रवार—शुक्रवार.
सोमवार—सोमवार.	बृहस्पत—गुरुवार.	शनीश्चर—शनिवार.
मंगल—मंगलवार		



॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

हिन्दी शिक्षावली पहेला भागना गुजराती अर्थ.

पाठ १. साधारण उपदेश—सामान्य बोध.

केवल—फक्त.
साथी है—सोबतीछे.
ही—ज.
मालिकका—धणीनुं.
मनसे—दिलथी.
तुम्हारे—तमारां
उससे—तेनाथी.
कुछ—कंइ.
छिपा—छानुं.
वह—ते.

जिसमें—जेमां.
जल्द—जलदी
उसे—तेने.
बिना पूरा किये—पूरुं कर्या वगर.
संभालता है—संभाळे छे.
इस—आ.
पड़ोसियोंसे—पाडोशीओ साथे.

मेल—संप.
और—अने.
बदन—शरीर.
साफ—चोख्खुं, स्वच्छ.
कमाया हुआ—कमायलुं.
नहीं ठहरता—रहेतुं नथी.
वैसेही—तेज प्रमाणे.

(१) दुःखमां फक्त इश्वरज सोबती (बेली) छे.

(२) धणीनुं काम साचा दिलथी करो.

(३) तमारां सघळां कामोने इश्वर जुए छे; तेनाथी कंइ छानुं नथी.

(४) ते घर जल्दी मटी जाय छे तेमां टंटो थाय छे. (जे घरमां टंटो थाय छे ते घर जल्दी नाश पामे छे.)

(५) सारा माणस जे काम करवा मांडे छे ते पूरुं कर्या वगर छोडता नथी.

(६) दुःखमां धीरज माणसने संभाळे छे.

(७) विद्यानी बराबर आ संसारमां कोइ धन नथी.

(८) पाडोशीओ साथे संप राखो अने बधाने पोताना भाइ–बंधु बराबर मानो.

(९) शरीर चोख्खुं राखो, स्वच्छ छोकराओने बधा प्यार करे छे.

(१०) नठारां कामोथी कमायलुं धन रहेतुं नथी, जे प्रमाणे आवे छे तेज प्रमाणे जाय छे.



पाठ २. साधारण उपदेश–सामान्य बोध.

किसीको–कोइने	तुम्हारीसा–तमारा जेवो
मत–ना	जान–जीव
सताओ–दुःखदो	उसकी–तेनी

औरोंकी—बीजाओनी
लगा रहता है—मंडया रहे छे
वह—ते
कुढ़ताहै—बळे छे
तुम्हे—तमने
सौंपा जाय—सोंपवामां आवे
सच्चाईसे—प्रमाणिकपणे
उन्हें—तेमने
धोखा—दगो
चुभजातीहै--पेशी जाय छे
इसमे—एमां
इसलिये--एथी करीने
उनपर--तेमना उपर
करनेमें--करवामां
कौनजाने—कोण जाणे
फिर—पछी
उसे—तेने.

(१) कोइने दुःख दो नहि, बधानो तमारा जेवो जीव छे.

(२) जे पोताना भरोंसाथी काम करे छे, तेनी इश्वर सहायता--मदद करे छे.

(३) जे बीजाओनी भलाइमां मंडया रहेछे, ते सुखी रहेछे.

(४) जे बीजाओने सुखी जोइने बळे छे ते दुखी रहेछे.

(५) जे काम तमने सोंपवामां आवे, ते प्रमाणिकपणे करो.

(६) जे तमारा उपर भरोसो राखे, तेमने कदी दगो दो नहि.

(७) कोइने नठारुं ना कहो, (कारणके) नठारी बात तीरनी पेठे पेसी जाय छे.

(८) नठारा माणसोनी सोबत भूल करीने पण करशो नहि, एमां नुकशान छे.

(९) नठारा माणस पोताना भाइबंधने दगो दे छे, एथी करीने तेमना उपर कोइ वखत भरोसो करशो नहि.

(१०) सारुं काम करवामां वार करशो नहि, कोण जाणे फरी तमे तेने करी शको अगर न करी शको.

पाठ ३. साधारण उपदेश—सामान्य बोध.

बुरे--नठारा	पछताओगे--पस्ताशो. (नथी
अच्छेका--सारानुं	नहिपतियाता--विश्वास करतुं
वही--तेज	पढ़ेलिखेका--भणेलागणेलानो
बैरी--शत्रु	किसीका--कोइनुं
बडोंका--मोटाओनुं	आदर--सत्कार
इसीमें--एमांज	सबसे--बधानी साथे
होगा--थशे	कडवी--दुख लागे तेवी

(१) नठारां कामोनुं फळ नठारुं छे अने सारानुं सारुं.

(२) मित्र तेज छे जे वखत उपर काम आवे.

(३) शत्रु सारी सारी वातो पण करे, तो पण तेनो विश्वास करवो नहि.

(४) मोटाओनुं कह्युं मानो, एमांज तमारु भलुं थशे.

(५) वगर विचारे कोइ काम करशो नहि, नहि तो पस्ताशो.

(६) जूठुं ना बोलो, (कारण के) जूठानो विश्वास कोइ करतुं नथी.

(७) भणेला गणेलानो सघळी जगाए सत्कार थाय छे, मूर्खनो कोइ सत्कार करतुं नथी.

(८) बधानी भलाइमां रहो, नठारुं कोइनुं पण विचारशो नहि.

(९) मूआ पछी पाप ने पुण्य वगर कशुं साथे जतुं नथी.

(१०) बधानी साथे सारी वात बोलो; कडवी-दुःख लागे तेवी वात कोइनी साथे कहेशो नहि.

पाठ ४. साधारण उपदेश—सामान्य बोध.

उन्होंने--तेमणे	अंत--छेवट
कितने--केटलुं	समझ बूझकर--समजीने
उठायेहैं--वेठयां छे	गालियाँ--गाळो
बढकर--वधारे	कोसों--घणा गाउ
विना समजे बूजे--समज्या वगर	धूपमें--तापमां
कद्द डालनेमें--कही देवामां	तुरंतही--तरतज
सोच विचारलो--विचारीलो	सुस्ताकर--आराम लइने

पैर--पग | क्योंकि--केमके
देख भालकर--जोइने | औरोंका--बीजाओनो

(१) मा बापनी सेवा करो; तेमणे तमारे माटे केटलुं दुःख वेठयुं छे. तेओथी वधारे तमारुं भलुं इच्छवावाळुं कोइ नथी.

(२) समज्या वगर कोइ वात मोढेथी काढशो नहि. जे मनमां आवे ते वगर विचारे कही देवामां कोइ कोइ वखत मोटुं नुकसान थाय छे.

(३) ज्यारे तमे कोइ कामने करवा इच्छो त्यारे सारी रीते विचारीलो के एनुं छेवट शुं थशे. पोतानुं नुकसान (अने) नफो समजीने ते काममां हाथ घालो.

(४) गाळ अथवा कोइ नठारी वात भूलीने पण मोढेथी न काढो, (कारण के) गाळो देवी (ए) नठारा छोकराओनुं काम छे.

सारा छोकरा एवी वातोथी घणा गाउ वेगळे जाय छे.

(५) तापमां बहार जशो नहि, बहारथी आवीने तरतज पाणी पीशो नहि. थोडीवार आराम लइने, ज्यारे ठंडा पडो, त्यारे पोतानी तरस चोक्खा पाणीथी शांत करो.

(६) रस्तामां जोइने चालो; एवुं न होवुं जोइए के ठोकर खाइने पडी जाओ, अथवा कांटो वागे अथवा कोइ जीव जंतु पग तळे दबाइ जवाथी करडी खाय.

(७) पोतानी लडाइमां दुःख वगर कांइ पण सुख नथी, केमके एमां आपणुं पण मन दिलगीर थाय छे अने बीजाओनो पण जीव बगडे छे.

पाठ ९. सफाइ—चोक्खाइ.

उनको—तेओने	सताने लगता है—सताववा लागे छे
आलसियोंकी—आळसु माणसोनी	आलसि—आळसु
मैले कुचैले—मेला, गंदा.	धिनातेहै—धिक्कारे छे
दरिद्र—दळदर, गरिबाइ	होही जाताहै—थइज जाय छे
पसिना—परसेवो	पहिना करो—पहेर्या करो

(१) जे छोकरा स्वच्छ रहे छे तेओने सर्व कोइ प्यार करे छे.

(२) गंदा छोकराओने सघळा धिक्कारे छे.

(३) शरीर मेलुं रहेवाथी परसेवो नीकळतो बंध थइ जाय छे.

(४) परसेवो बंध थवाथी जो बीजो कोइ रोग न थाय तो माणस आळसु तो थइज जाय छे.

(५) आळसु माणसोनी बुद्धि पण मंद थइ जाय छे अने तेओने दरिद्र (गरिबाइ) सतावबा लागे छे. एटला माटे छोकराओ ! तमारे पोतानुं शरीर चोक्खुं राखवुं जोइए अने स्वच्छ लूगडां पहेर्यां करवां.

पाठ ६. सवेरे उठनेके लाभ—मळस्के उठवाथी लाभ.

सवेरे—मळस्के	जिसने—जेणे
कियाजाताहै—करवामां आवेछे	वैसा—तेवुं, ते प्रमाणे
सोते—सूइ	सुस्ती—आळसाइ
उठतेही—उठतांज	बनाईहैं—बनावी छे
जी—जीव, ध्यान, मन	कम—ओछुं
बढ़तीहै—वधे छे	वानडाले—ठेव पाडवी.

(१) छोकराओ ! मळस्के उठो अने उठतांज भगवाननुं नाम लो. जेणे तमारा सुखने माटे घणी वस्तुओ बनावी छे.

(२) मळस्के—सवारमां उठीने जे काम करवामां आवे छे तेमां घणो जीव परोवाय छे.

(३) भणतुं जेवुं सवारमां थाय छे तेवुं बीजी वखत थइ शकतुं नथी.

(४) मळस्के उठीने जे याद करवामां आवे छे ते घणुं जल्दी याद थाय छे अने ओछुं भूलाय छे.

(५) मळस्के उठवाथी बुद्धि वधे छे, अने शरीरमां रोग थतो नथी.

(६) सूरज उग्या पछी सूइ रहेवाथी आळसाई आवे छे.

(७) एटला माटे छोकराओए मळस्के उठवानी टेव पाडवी जोइए.

पाठ ७. साफ पाणी—स्वच्छ पाणी.

जहाँतक—ज्यांसुधी	औटानेसे—उकाळवाथी, गरम करवाथी
पेंदीमें—तळीयामां	छनकार—गळाइने
बीमारियाँ—रोगो, व्याधि, दुःखो.	तिपाई—त्रण पायानी घोडी.
ककड़—कांकरा, बालू—रेती.	गलीहुई—ओगळेला

(१) ज्यां सुधी बनी शके (त्यांसुधी) चोक्खुं पाणी पीवुं जोईए.

(२) चोक्खुं पाणी पीवाथी रोग ओछा थाय छे.

(३) पाणी गरम करवाथी-उकाळवाथी चोक्खुं थइ जायछे.

(४) एक त्रण पायानी घोडी उपर चार घडा तळे उपर राखीने, उपरना त्रण घडाना तळीयामां काणां पाडी-ने एकमां कोयला, बीजामां कांकरा अने त्रीजामां रेती, भरवामां आवे तो जे पाणी आ त्रण घडामांथी गळाइने नीचेना घडामां भराशे, ते घणुंज चोक्खुं थशे.

(५) वरसादनुं पाणी पण चोक्खुं होय छे, पण पडतां प-डतां तेमां केटलीक वस्तुओ मळी जाय छे.

(६) ओगळेला बरफनुं पाणी पण घणुं चोक्खुं होय छे.

पाठ ८. हँसी ठट्ठा—मश्करी.

बैरका—वेरनुं	लोग—लोक
कियाकरो—करो	किसीसे—कोइनी साथे
इसीमें—एमांज	तुमसे—तमारी साथे
इसलिये—एटला माटे	
उसे—तेने	बड़ाइ करेंगे—वखाण करशे.

(१) मश्करी करवा (ए) वेरनुं मूळ छे, एटला माटे म-श्करी कोइनी न करो.

(२) कोइ तमारी मश्करी करे अथवा तमारी साथे वेर करे तो तमे तेने मनमां लावशो नहि.

(३) एमांज तमारूं भलुं थशे अने बधा लोक तमारां वखाण करशे.

(४) जे माणस नठाराने बदले सारूं करे छे ते उत्तम गणाय छे.

(५) जे नठाराने बदले नठारुं करे छे ते मध्यम छे; अने जे साराने बदले नठारूं करे छे ते नीच कहेवाय छे.

पाठ ९. बुराईका फल—नठारानुं फळ.

कुत्तोंने—कुतराओए	अपने—पोतानुं
घबड़ाकर—घभराइने	आड़में—ओथामां
उसको—तेने	चरलीं—चरी लीधां
पीछाकियां—केडो लीधो	ऐसीही—एवीज
उस—ते	होगई—संताइ गइ
उसे—तेने	आड़—ओथो
पेड़की—झाडना	दुर्गत—नठारी दशा
पत्तियाँ—पांदडां	

(१) एक वखत शिकारी कुतराओए एक बकरीनो केडो लीधो

(२) बकरी नासी जइने एक गाममां एक बागमां झाडना ओथामां संताइ गइ अने तेथी कुतराओ तेने जोइ शक्या नहि.

(३) थोडीवार पछी बकरीए भूखथी गभराइने ते झाडना पांदडां चरी लीधां.

(४) पांदडानो ओथो न रहेवाथी कुतराओए तेने जोइ लीधी

(५) बधा तेना उपर टुटी पडया अने तेने मारी नाखी.

(६) साचुं छे, जे पोतानुं भलुं करवावाळानी साथे भुंडुं करे छे तेनी एवीज नठारी दशा थाय छे.

पाठ १० बरगदका पेड़—वडनुं झाड.

अनोखा—विचित्र	पेड़—झाड
भीतर—अंदर	जटायें—मूळीओ
जडे—मूळीआं	जमजातीहै—चोंटी जाय छे
बहुतसी—घणीज	भडोंचमें—भरूचमां
धँसकर—धसीने	इतना—एवडुं

(१) वड आ देशमां एक विचित्र झाड छे.

(२) एनी डाळीओमांथी घणीज मूळीओ नीचे लटके छे.

(३) ज्यारे तेओ जमीन सुधी पहोंची जाय छे त्यारे अंदर धसीने चोंटी जाय छे, अने मूळीआं बनी जाय छे.

(४) वडनुं झाड घणुं मोटुं अने छायावाळुं होय छे.

(५) बधाथी मोटुं वडनुं झाड नर्मदा नदीना कांठाउपर भरुचमां छे.

(६) ते एवडुं मोटुं छे के हजारो माणसो तेनी छायामां सुखे रही शके छे.

पाठ ११. प्यासा कौवा—तरस्यो कागडो.

मढ़ँ—मोटुं	डालकर—घालीने
कहाँकि—क्यांथीके	लालाकर—लावीलावीने
डालीं—नांख्या	अच्छीतरहसे—सारी रीते
कईबार—केटलीक वखत	बुझाई—शांतकरी
कंकडी—कांकरा	प्यास—तरस
गिरतीथी—पडता हता	अकारथ—नकामी

(१) एक कागडो तरसने लीधे उडतो उडतो पाणीना घडानी पासे गयो.

(२) घडानुं मोढुं नानुं हतुं अने पाणी तेमां थोडुं हतुं.

(३) कागडाए केटलीक वखत चांच घालीने पाणी पावानुं इच्छयुं.

(४) पण तेनी चांच एवडी मोटी क्यांथी के पाणी सुधी पहोंची शके.

(५) छेवटे कागडाए ते घडामां कांकरा लावी लावीने नांख्यां

(६) जेम जेम कांकरा पडता हता (तेम तेम) पाणी उपर चढी आवतुं हतुं.

(७) थोडीज वारमां पाणी घडाना म्हों सुधी पहोंची गयुं.

(८) अने कागडाए सारी रीते पोतानी तरस शांत करी.

(९) साचुं छे (के) महेनत नकामी जती नथी.

पाठ १२. आलस या सुस्ती—आळस अथवा सुस्ती.

आलसी—आळसु	पिंढ—केडो
बहता—वहेतुं	काई—लील
यही—एवीज	फटकने देतो—फरकवा देतो
जीनातक—जीवन, जीवतर	घेर लेता है—घेरी ले छे
बँधा—बंधाइ	गम जाती है—वाझी जाय छे
कामकाजी—उद्योगी, महेनतु	वैरी—शत्रु

(१) आळसु माणसनुं पोतानुं जीवन पण भारे थइ पडेछे.

(२) थोडाज दिवसोमां ते कशा कामनो रहेतो नथी.

(३) महेनत नहि करवाथी शरीरने जातजातना रोग लागु पडी जाय छे.

(४) दुःख आळसु माणसनो छेवटनो वखत सुधी (मरण सुधी) केडो छोडतुं नथी.

(५) आळसु माणसने दळदर घेरी ले छे.

(६) जे पाणी वहेतुं रहे छे ते चोक्खुं रहे छे.

(७) अने जे पाणी बंधाइ रहे छे ते मेलुं थइ जाय छे अने तेनी उपर कीळ बाझी जाय छे.

(८) एवीज दशा उद्योगी अने आळसु माणसनी जाणो.

(९) एटला माटे उद्योगी माणस आळसने पोतानो शत्रु समजीने पोतानी पासे फरकवा देतो नथी.

पाठ १३. लडके और मेंढक—छोकरां अने देडकां.

तालमें—तलावमां, कांसमां	जीमें—मनमां
घबडाये—गभरायां	किसीका—कोइनुं
गिडगिड़ा—कालावाला	ऐसे खेल—एवी रमत
उनके—तेमना	बरसाने लगे—फेंकवा लाग्या
सिर—माथुं	पाँव—पग
जबाब—जवाब	न खेलें—न रमवी

(१) एक तलावमां देडकां रहेतां हतां तेनां कांठा उपर केटलांक छोकरां रमतां हतां.

(२) तेमना मनमां जे आव्युं तो तळावमां धडाधड पथरा फेंकवा लाग्या.

(३) बिचारां देडकां गभरायां; कोइनुं माथुं फुटयुं अने कोइना हाथ पग भांग्या.

(४) एक देडकाए पाणीनी बहार माथुं काढीने छोकराओने कालावाला करीने कह्युं.

(५) "तमे अमारा उपर दया करो अने पथरा फेंकशो नहि"

(६) एक छोकराए जवाब दीधो "अमे तमारा माटे अमारी रमत छोडी दइए".

(७) देडकाए कह्युं " तमारा आ खेलथी अमारां माथां फूटे छे, अने अमे मरीए छीए ".

(८) छोकराओए इच्छवुं जोइए के एवी रमत न रमवी (के) जेथी बीजाओने दुःख थाय.

पाठ १४. बुरा लड़का—नठारो छोकरो.

वडोंका—वडीलोनुं
ठीक समयपर—वखतसर
साथीयोंको—सोबतीओने
पढ़नेसे—भणवामां
बहाना—बहानुं
छेडताहै—खीजवे छे
जी चुराता है—जीव चोरे छे
गलियोंमें—गलियोमां, शेरीओमां
पढता—भणता
सोचता—विचारता.

(१) नठारो छोकरो ते छे जे पोताना वडीलोनुं कह्युं मानतो नथी अने भणवामां जीव चोर छे. (भणवामां लक्ष आपतो नथी.)

(२) पाठशाळाना नियमो उपर ध्यान आपतो नथी अने वखतसर निशाळमां जतो नथी.

(३) पाठशाळामां जवानुं बहानुं काढीने शेरीओमां रम्याकुद्या करे छे; जूठी वातो जोडी कहाडे छे; पोताना भाइबंधोने खीजवे छे; पोते भणतो नथी अने बीजाओने भणवा देतो नथी.

(४) ज्यारे गुरुजी भणावे छे त्यारे ध्यान आपतो नथी, मनमां विचारतो नथी के लखवा वांचवाथी अमारां मावाप अने गुरुजी राजी थशे.

(५) जे छोकराओ पोतानुं भलुं इच्छे छे तेमणे आ सघळी वातो छोडवी अने वडिलोनुं कह्युं मानवुं जोइए.

पाठ १५. भाईयोंमें मेल (१)—भाइओमां संप. (१)

कयोंकि—केमके
बहुतही—घणुंज
हो जाते हैं—थइ जाय छे
संतान—छोकरां
बड़ाई होती है—प्रसंशा थाय छे.

ऐसाही—एवुंज	वर्ताव—वर्तन
पिया है—पीधुं छे	आपसमें—एक बीजामां
देखा गया है—जोवामां आव्युंछे	इस तरह पर—आ प्रमाणे

(१) भाइ भाइमां घणुंज थोडुं अंतर छे, केमके तेओ एकज मावापनां छोकरां छे.

(२) अने तेमणे एकज मानुं दूध पीधुं छे.

(३) एथी करीने भाइ भाइनुं एक बीजामां लढवुं घणुंज खराब छे.

(४) जे भाइ एक बीजानी साथे संप राखे छे तेओनी प्रशंसा थाय छे.

(५) एथी करीने भाइओए एक बीजा साथे घणा प्यारथी रहेवुं जोइए.

(६) जे ए प्रमाणे करे छे तेओनां मावाप राजी रहे छे.

(७) कोइ कोइ वखत जोवामां आव्युं छे के स्वभाव मळतो नहि आववाना कारणे भाइओ जुदा थइ जाय छे.

(८) भाइओ जो एक बीजाथी जुदा पण थइ जाय तो पण तेओए एक बीजाने मदद कर्या करवी जोइए

(९) एवी रीते एक बीजामां संप राखवाथी मोटां मोटां काम पण सहजमां थइ जाय छे.

(१०) पाडोशियो अने मित्रोनी साथे पण एवुंज वर्तन करवुं जोइए.

---

(२)

कई—केटलाक	हो जाओगे—थइ जशो
जाँच—अजमायश	अंटी—आंटी
मिले जुले—हळीमळीने	अलग—जुदो
सूतकी—सूतरनी	पहुँचा—पहोंचाडी
तार—तांतणो	

(१) एक माणसने केटलाक छोकरा हता. तेओ रोज अंदर अंदर लडता हता.

(२) तेओना बाप तेओने घणुं घणुं समजावता हता, पण तेओ मानता नहोता.

(३) एक दिवस बापे पोताना सघळा छोकराओने एकठा कर्या अने तेओने एक सूतरनी आंटी आपीने कह्युं के आना उपर पोताना बळनी अजमायश करो.

(४) दरेक छोकराए तेने तोडवानुं इच्छयुं, पण ते कोइथी न टूटी.

(५) त्यारे बापे कह्युं ' एक तांतणो जुदो करीने तोडो. '

(६) आ सांभळतांज तेओए तेने तोडीने फेंकी दीधी.

(७) डोसाए कह्युं " एज प्रमाणे जो तमे एक बीजा साथे

हळी मळीने रहेशो तो तमारुं कोइ कांइ करी शकशे नहि"

(८) अने जो जुदा थइ जशो तो जे चाहशे (ते) तमने नुकशान पहोंचाडी शकशे.

पाठ १६ लालचसे हानि (१)–लालचथी नुकशान (१)

बडा–घणो	सोचा–विचार्युं
फाड डालूँ–फाडी नांखु	ठानकर–नक्की करी
उस–ते	हानि–नुकशान
अंडा–इंडुं	मुर्गीका–मरघीनुं
एकही–एकीज	उसने–तेणे
भी–पण	

(१) एक माणस घणो लालचु हतो. तेनी पासे एक मरघी हती.

(२) ते रोज एक सोनानुं इंडु आप्या करती हती.

(३) ते लालचुए एक दिवस विचार्युं,

(४) हुं आ मरघीनुं पेट फाडी नांखुं तो बधा इंडां मने एकीज वारे मळी जाय.

(५) एवुं मनमां नक्की करी तेणे ते विचारी मरघीने मारी नांखी; पण इंडुं एक पण हाथ न आव्युं.

(६) साचुं छे, घणी लालचथी नुकशान थाय छे.

(२)

मुँहमें—मोंमां	परिछाई—पडछायो
छीनलूं—छीनवी लउं	खोला—पहोळुं कर्युं
वह गया—वह गयो	लालचियोंकी—लालचुओनी
लिये—लइने	दबाये—दबावीने
सोच—विचार	गिरकर—पडीने
पछताकर—पस्ताइने	यही—आवीज

(१) एक कुतरो मोंमां रोटलो लइने नदीने सामे कांठे जतो हतो.

(२) पाणीमां तेणे पोतानो पडछायो जोयो.

(३) कुतरो एवुं समज्यो के बीजो कुतरो मोंमां रोटलो दबावा जाय छे.

(४) तेना मनमां लालच समाइ अने तेणे इच्छयुं के हुं तेनी पासेथी रोटलो छीनवी लउं.

(५) एवो विचार करी रोटलो छीनवी लेवाने जेवुं म्होडुं पहोळुं कर्युं तेवोज जे रोटलानो ककडो तेना मोढामां हतो ते पण नदीमां पडीने वही गयो.

(६) त्यारे कुतरो पस्ताइने कहेवा लाग्यो " हाय हाय ! लालचुओनी आवीज दशा थाय छे. "

पाठ १७ विद्या सिखवा—विद्या भणवी.

खेल कूदमें—रमवा कूदवामां	सब जगह—बधी जगाए
चाहेंगे—चाहशे	जीते—जीवतां
दौलत—पूंजी	अंतमें—छेवटे, आखर वखते
अकारथ—नकामो	आदर होगा—सत्कार थशे
बड़े होनेपर—मोटा थया पछी	कबतक—क्यांसुधी
किसीके—कोइना.	बन पडेगा—बनी शकशे
जिससे—जेथी.	

(१) छोकराओ ! रमवा कूदवामां मन लगाडो नहि. रमवामां वखत नकामो जाय छे.

(२) पोतानो वखत लखवा भणवामां लगाडो जेथी तमने छेवटे सुख मळे.

(३) जो तमे एवुं करशो तो तमारां मावाप पण तमने चाहशे अने मोटा थया पछी बधी जगाए तमारो सत्कार थशे.

(४) पोताना मावापनी पूंजी उपर झूलशो नहि (आधार राखशो नहि.)

(५) हमेशां कोइना मावाप जीवतां नथी रहेतां; एकने एक दिवसे मरीज जाय छे.

(६) पछी तेमनी दौलत क्यां सुधी रहेशे.

(७) ज्यारे माबाप पण रहेशे नहि अने तेओनी दोलत पण रहेशे नहि त्यारे तमे पस्ताशो.

(८) पछी तमाराथी कांइपण बनी शकशे नहि. एटला माटे छोकराओ विद्या भणवामां मन लगाडो.

पाठ १८. विद्याकी बडाई—विद्यानी मोटाई.

सबकुछ—बधुं	उसीके—तेनाज
आपसमें—अरस्परस	छीन—लइ
उतना—तेटलुं	घटही—घटीज
असबाबको—मिल्कतने	वहीं—त्यांज
बाँट लेते हैं—वहेंची ले छे	पाओ—पामो
जितना—जेटलुं	वह—ते
चुरा—चोरी	बढतीही—वधतीज
कितनाही—केटलुंक; गमे तेटलुं	बुढापेमें—घरडपणमां

(१) विद्यानी बराबर कोइ धन नथी. जेनी पासे विद्या छे तेनी पासे बधुं छे,

(२) जुओ माल मिल्कतने चोर चोरी लइ जाय छे, पण एने चोर पण चोरी शकता नथी.

(३) राजा कोइने शिक्षा आपवा इच्छे छे तो तेनुं धन लइ ले छे, पण विद्याने ते पण लइ शकतो नथी.

(४) भाइ भांडु ज्यारे जुदा थाय छे त्यारे घरना बधा माल मिलकत अरस्परस वहेंची ले छे, पण विद्यामां कोइ-नो भाग वहेंचवानो होतो नथी.

(५) गमे तेटलुं धन कोइनी पासे केम न होय, (होय तो पण) आपवाथी घटीज जाय छे अने छेवटे कांइ र-हेतुं नथी.

(६) पण विद्यामां बधांथी मोटा गुण ए छे के आपवाथी वधतीज जाय छे.

(७) राजाओमां पण जेटलुं विद्वाननुं मान होय छे (तेटलुं) धनवाननुं नथी होतुं.

(८) राजानो सत्कार तेनाज राजमां होय छे; पण विद्वान ज्यां जाय छे त्यांज तेनो सत्कार थाय छे.

(९) छोकराओ ! एटला माटे तमारे जीव लगाडीने विद्या शीखवी जोइए जेथी जुवानी अने घरडपणमां सुख पामो.

पाठ १९. कौवा और लोमडी—कागडो अने लोंकडी.

कहींसे—कहींथी	पर—पांखो
ओर—तरफ	काँव काँव—का का
सुनानेको—संभळाववाने	इतनेमें—एटलामां
उठा लायो—उपाडी लाव्यो	इस—आ

खोलतेही—उघाडतांज.	होकर—थइने
उधर—ते तरफ.	जान पडताहै—जणाय छे
सुहावना—शोभीतुं	ले लम्बी हूई—लइ चालती थइ
गिरगई—पडी गइ	

(१) एक कागडो एक दिवस रोटलानो ककडो कहींथी उपाडी लाव्यो अने झाड उपर बेसीने खातो हतो.

(२) एटलामां एक लोंकडी ते तरफ थइने नीकळी.

(३) लोंकडीए कागडानी तरफ जोइने कह्युं के तमारी पांखो घणी सुंदर छे.

(४) अने तमारूं रूप आ वखते घणुं शोभितुं जणाय छे.

(५) जो कांइ तमारी बोली पण सारी होत अने तमे गाइ शकत तो तमारी बराबर कोइ पक्षी न होत (थइ शकत नहि).

(६) आ सांभळीने कागडो घणो राजी थयो अने पोतानुं गायन संभळाववाने का का करवा लाग्यो.

(७) मों उघडतांज रोटलो पडी गयो अने लोंकडी तेने लइ चालती थइ.

(८) जे जूठी मोटाइ इच्छे छे तेमनी एवीज दशा थाय छे.

पाठ २० खेती बडा धन है—खेती मोटुं धन छे.

किसी—कोइ	जी—जीव
बुलाया—बोलाव्या	सारा खेत—बधुं खेतर
बडी गहराई—वधारे उंडाइ	पाया—मेळव्युं
किसानके—खेडुतना	नहीं लगातेथे—राखता नहोता
गडा है—दाट्युं छे	उन्होने—तेओए
बो दिया—वावी दीधुं	चाट पडगई—रस पडी गयो
खिलाडी—रमतीआळ	खुदाहीथा—खोदयुंज हतुं
बाँट लेना—वहेंची लेजो	चाट—स्वाद
समयपर—वखतसर	उठाता है—मेळवे छे

(१) कोइ खेडुतना छोकरा घणा रमतीआळ हता अने खेतीना काममां जीव राखता नहोता.

(२) ज्यारे ते मरवा पडयो त्यारे तेणे पोताना छोकराओने पोतानी पासे बोलाव्या अने कह्युं " मारूं धन मारा खेतरमां दाट्युं छे. मारा मरी गया पछी तमे तेने खोदीने पोतपोतामां वहेंची लेजो."

(३) ज्यारे खेडुत मरी गयो (त्यारे) तेना छोकराओए धननी लालचथी बधुं खेतर वधारे उंडाई सुधी खोदी नाख्युं, पण धन कांइ पण हाथ न आव्युं.

(४) त्यारे निराश थइ तेओए ते खेतरने वावी दीधुं.

(५) खेतर तो खोदायुंज हतुं (पण) पाणी पण वखतसर वरस्युं, खेती सारी थइ अने एज धन छोकराओए खेतरमांथी मेळव्युं.

(६) पछी तो तेओने खेतीनो रस पडी गयो अने दर साल घणाय रुपीआ कमावा लाग्या.

(७) जे महेनत करे छे तेज लाभ मेळवे छे.

पाठ २१. शहदकी मक्खी और बर्र—मधमाखी अने साखादेड.

शहद—की—मध—नी	बर्र—साखादेड
इतना—एटलुं	तुम्हें—तमने
उनको—तेओने	इकठा—एकटुं
मक्खी—माख	क्यों—केम
मुझको—मने	उजाडते हैं—बाळे छे
डंक—डंख	न सतायेंगे—सतावशे नहि

(१) एक साखादेडीए एक दिवस मधमाखीने पुछ्युं.

(२) "लोक तमने केम आटलुं चाहे छे अने मने केम नथी चाहता ? तमने पाळे छे अने मने मारे छे.

(३) तमारे माटे घर बनावे छे अने मारा घरने देवता लगाडीने बाळे छे" मदमाखीए कह्युं.

(४) "तमाराथी तेओने कशो पण लाभ थतो नथी, तमे केवळ डंख मारो छो.

(५) एवी दशामां तेओ तमने केम चहाय.

(६) अने जुओ हु आखो दिवस मेहनत करीने तेओने माटे मध एकटुं करूं छुं.

(७) मारी पेठे तमे पण तेओनी साथे भलाइ करो.

(८) तो तेओ पण तमारी साथे भलाइ करशे.

(९) तमे तेओनी साथे बुराइ करवी छोडी दो तो तेओ पण तमने सतावशे नहि."

पाठ २२. झूठ बोलना—जूठुं बोलवुं.

बोलनेवालेका—बोलनारनो	खुल न जाय—उघाडुं न पडी जाय
लोग—लोक	इससे—एनाथी
छिपाने के—संताडवाने	बोलोगे—बोलशो
अनादर—तिरस्कार	प्यारे—वहाला
सोच—विचार	पाओगे—पामशो
दंड—शिक्षा	
कभी—कदी	

(१) जूठुं बोलनारनो सघळी जग्याए तिरस्कार थाय छे.

(२) जूठो माणस कदी साचुं पण बोले छे तो तेना साचने पण सघळा लोको जूठुंज समजे छे.

(३) रात दिवस तेने एज विचार थया करे छे के कहीं मारूं जूठ उघाडुं न पडी जाय.

(४) फरी तेने एक जूठ संताडवाने माटे सेंकडो बीजी जूठी वातो बनाववी पडे छे.

(५) जुठाने शिक्षा न थाय तो पण तेनी निंदा तो थाय छेज.

(६) एनाथी बचवाने माटे जूटुं कदी बोलवुं न जोइए.

(७) जो तमे साचुं बोलशो तो सघळाना वहाला बनी रहेशो अने सघळा तमारो विश्वास करशे.

(८) साचुं बोलवाथी तमे जगतमां मोटाइ पामशो.

(९) एटला माटे छोकराओ ! तमारे हमेशां साचुं बोलवुं जोइए अने जुठनुं नाम पण न लेवुं.

पाठ २३. रंग-रंग.

एकनएक—जुदी जातना	इसीलिये—आनेज लीधे
लोहूका—लोहीनो	बैंजनी—रींगणाना जेवो
हरियाली—लीलोतरी	हरा—लीलो
लोहेका—लोढानो	बहुतायतसे—वधारे
ओर—तरफ	वरस जानेके पीछे—वरसी रह्या पछी
जान पडती है—जणाय छे	
नीला—भूरो	

(१) जेटली वस्तु जोवामां आवे छे (ते) सर्वना जुदी जुदी जातना रंग होय छे.

(२) सोनानो रंग पीळो छे, चांदीनो धोळो, लोढानो काळो, आकाशनो भूरो, घासनो लीलो अने लोहीनो लाल.

(३) लाल रंग आंखोने घणुं नुकशान पहोंचाडे छे.

(४) लीला रंगनी तरफ गमे तेटली वार सुधी जुओ (पण) आंखो थाकती नथी.

(५) आनेज लीधे भगवाने लीला रंगनी वस्तु वधारे बनावी छे.

(६) जुओ वरसाद वरस्यापछीलीलोतरी केवी सुंदर जणायछे

(७) भुरो अने पीळो रंग एकठो थवाथी लीलो रंग बनेछे.

(८) भुरो अने लाल रंग एकठो थवाथी रींगणाना जेवो रंग बने छे.

पाठ २४. हाथीकी बुद्धिमानी—हाथीनी बुद्धि.

सीया—सीव्या

जैसी—जेवी

चुपचाप—छानोमानो

खिडकी—बारी

आदत—टेव

वहाँसे—त्यांथी

उधरसे—ते तरफथी

हँसीसे—मश्करीथी

राह—रस्ते
तालमें—तळावमां
चुभादी—घोची दीधी
कीचडहीकीचड—कादवजकादव
सुँढ डालता—सुंढ घालतो
सूई—सोय
सी रहेथे—शीवी रह्यो हतो

(१) कहेछे के दिल्हीमां एक दुकानमां दरजी लूगडां सी- व्या करतो हतो.

(२) ते दुकानमां एक बारी हती.

(३) ते तरफथी एक हाथी तळावमां पाणी पीवा दररोज जतो हतो.

(४) हाथी ते बारीमां पोतानी सुंढ घालतो हतो अने द- रजी तेने रोटी आपी देतो हतो.

(५) एक दिवस ते हाथीए, जेवी तेने टेव पाडी हती, (ते प्रमाणे) पोतानी सुंढ बारीमां घाली (ते वखते) ए दरजीए मश्करीथी रोटी आपवाने बदले तेनी सुंढमां सोय घोची दीधी.

(६) ते वखत तो हाथी कांइ पण न बोल्यो, छानोमानो तळावे चाल्यो गयो.

(७) त्यांथी मेलुं पाणी पोतानी सुंढमां भरी लाव्यो अने बारीने रस्ते दुकानमां नांखी दीधुं.

(८) दुकानमां कादवज कादव थइ गयो अने बधां लूगडां जे दरजी सीवी रह्यो हतो (ते) बगडी गयां.

पाठ २५. समयपर खाना—वखतसर खावुं.

ठीकसमयपर—बराबर वखतसर	बीमार—मांदो
वैसेही—तेज प्रमाणे	कई बार—वधारे वार
उटकर—अकरांतीउं	एकही समयपर—एकज वखते
खाना—खोराक	बहुतसा—घणुंज

(१) छोकराओए बराबर वखतसर खोराक खावो जोइए.

(२) एकज वखते हमेशां खावाथी भोजन सारी रीते पचे छे.

(३) भूख वगर खाधाथी अन्न पचतुं नथी.

(४) भूखथी ओछुं अथवा वधारे खावुं बन्नेथी शरीर रोगी थइ जाय छे.

(५) जेम थोडुं खावाथी माणस दुबळो थइ जाय छे, तेज प्रमाणे वधारे खावाथी मांदो पडी जाय छे.

(६) खातां खातां घणुंज पाणी पीवाथी भूख ओछी थइ जाय छे.

(७) एटला माटे खाधा पछी पाणी पीवुं सारूं छे.

(८) एकवार अकरांतीउं खावा करतां वधारे वार थोडुं थोडुं खावुं सारूं छे.

पाठ २६. ईश्वरके उपकार—ईश्वरनो उपकार.

कैसे—केवा
दम—श्वास
पैर—पग
धूप—तडको
लगता है—लागे छे
पहिचाण—ओळखाण
हमारेही—अमारेज
हमें—अमने
बचनेसे—बचवाथी

(१) जुओ भगवाने अमारा उपर केवा उपकार कर्या छे.

(२) तेणे हवा, माटी, पाणी, तडको, अमारेज माटे बनाव्यां छे.

(३) माटी वगर अन्न नीपजतुंज नथी.

(४) हवा नहि होवाथी श्वास घुंटावा लागे छे.

(५) पाणी वगर कोइ जीवी शकतुं नथी.

(६) ताप वगर अनाज अने फळ पाकतांज नथी.

(७) तेणे अमने बोलवाने मोढुं, सुंघवाने नाक, सांभळवाने कान, काम करवाने हाथ अने चालवाने पग आप्यां छे.

(८) तेणे अमने बुद्धि आपी छे तेथी अमे सारूं खोटुं ओळखी शकीए छीए.

(९) जेणे अमारा उपर आ उपकार कर्या छे, तेने राजी राखवो (ए) अमारो मुख्य धर्म छे.

(१०) भलाइ करवाथी अने बुराइथी बचवाथी ते राजी थाय छे.
(११) भगवाने अमारा उपर भलाइ करी छे; (माटे) अमारे इच्छवुं जोइए के अमारे पण बीजाओनी साथे भलाइ करवी जोइए.

पाठ २७. मावापका प्यार—माबापतुं हेत.

कुढाते हैं—कढापो करावे छे	आयु—आयुष्य
नरमीसे—नम्रताथी	दुलार—प्यार
चालचलन—वर्तन	भी—पण
इसी सोचमें—आज दुःखमां	बच्चोंहीमें—छोकराओमांज
बर्ताव—वर्तन	तरफदारी—तरफेण
जड समझ—मूळ समजी	सा—जोवो

(१) ज्यारे छोकरा नठारा नीकळे छे अने मावापने कढापो करावे छे त्यारे तेओने घणुं दुःख थाय छे.
(२) आज दुःखमां कदी कदी तेओनुं आयुष्य पण ओछुं थइ जाय छे.
(३) छोकराओ सारा नीकळे छे अने मावापने राजी राखे छे तो तेओनुं बधुं दुःख वेगळुं जतुं रहे छे.
(४) मावापनो जीव छोकराओमांज लागेलो रहे छे.
(५) ज्यारे तेओने दुःख थाय छे त्यारे मावाप पण दुःखी थाय छे.

(६) अने ज्यारे तेओ सुखी रहे छे त्यारे माबाप पण सुख पामे छे.

(७) बापना हेतथी मानुं हेत वधारे होय छे.

(८) सारो बाप पोताना छोकराओनी साथे नम्रताथी वर्तन करे छे.

(९) तेओ तेमना उपर बहु प्यार करता नथी (तेमज) तरफेण पण करता नथी.

(१०) तेओ पहेलां पोतानुं वर्तन सुधारे छे, अने साचवटने बधी भळाइनुं मूळ समजी पोतानां छोकरांने साचाइना रस्तापर चढावे छे.

(११) छोकराओने पण पोतानाज जेवो स्वभाव शीखवे छे.

पाठ २८. अच्छी संतान—सारां छोकरां.

कंगाल—गरीब	आ गये—आवी गया
जाया करतेथे—जता हता	यहाँ—आज
देखकर—जोइने	सुशील—विवेकी, शान्त
पाँच—पांच	आर—तरफ

(१) एक गरीब स्त्रीने पांच छोकरा हता.

(२) तेओ घणा विवेकी हता अने रोज निशाळमां भणवा जता हता.

(३) एक दिवस कोइए तेने पूछयुं "तारी पासे शुं धन छे?"

(४) ते स्त्रीए कह्युं " मारी पासे पांच रत्न छे. "

(५) तेणे पुछयुं " क्यां छे. "

(६) एटलामांज तेना छोकरा निशाळमांथी आवी गया.

(७) ते स्त्रीए छोकरांओनी तरफ जोइने कह्युं. " आज मारां रत्न छे. "

(८) साचुं छे, सारां छोकरां रत्नथी उतरतां होतां नथी.

पाठ २९. छोहारेका पेड—खारेकनुं झाड.

सिरेपर—माथा उपर	घोलकर—घोळीने
पंद्रह—पंदर	फैल—फेलाइ
पीसकर—दळीने	सुखाकर—सुकवीने
पत्तियाँ—पांदडां	गुठली—ठळीआ
रूचिसे—खुशीथी	गुच्छे—झुमरवा
चूकनी—भूकी	इनको—आने
तरह—माफक	भेडोंको—घेटांने
धूपमें—तापमां	

[१] खारेकनुं झाड सीधुं पचास साठ हाथ सुधी लांबु चाल्युं जाय छे.

[२] तेना माथा उपर लांबा लांबा पांदडां छत्रीनी माफक फेलाइ जाय छे.

[३] एनुं फळ मीठु अने लाल रंगनुं होय छे.

[४] झाडना माथा उपर फळनां पंदर वीस झुमखां लटकेछे.

[५] एक एक गुच्छो दस दस शेर सुधी तोलमां उतरे छे.

[६] एना फळने अरबस्तानना लोको घणी खुशीथी खायछे,

[७] फळोने तापमां सुकवीने राखे छे.

[८] सुकायलां फळ घणा दिवस सुधी रहे छे.

[९] आने दळीने तेओ भूकी बनावी ले छे.

[१०] अने ज्यारे कहीं बहार जाय छे (त्यारे) पोतानी साथे लइ जाय छे.

[११] तेने पाणीमां घोळीने पोते पीए छे.

[१२] अने पोताना घोडाओ तथा कुतराओने पाय छे.

[१३] ठळीआ दळीने पोतानां उंटो अने घेटांने आपे छे— खवरावे छे.

पाठ ३०. पहाड—पर्वत.

मिट्टी—माटी	झरने—झरणो
चोटियाँ—शिखरो	ढकी—ढंकायला
सर्दी—शरदी	जिनमेसें—जेमनामांथी

निकास—निकळवुं	इन्हीसे—एमांथी
आलय—ठेकाणुं	इससे—एमांथी
वहां—त्यां	हमको—अमने

[१] पहाड माटी अने पत्थरथी बनेलो छे.

[२] पहाडोमांथी कंइ कंइ पाणीना झरणो नीकळयां छे.

[३] नदीओनुं नीकळवुं पण एमांथी होय छे.

[४] पहाडोमां हिमालय बधाथी उंचो होय छे.

[५] एटला माटे (तेने) पर्वतोनो राजा कहेवामां आवे छे.

[६] आ पर्वत हिंदुस्ताननी उत्तरमां छे.

[७] एना शिखरो बरफथी ढंकायलां रहे छे.

[८] एटला माटे एनुं नाम हिमालय (हिम—बरफ अने आलय—ठेकाणुं) पडयुं. गंगाजी एमांथी निकळयां छे.

[९] पर्वतो पर उंचाइना कारण शरदी बहु होय छे.

[१०] कंइ कंइ हवा पण पर्वत छे के, जेमनाथी देवता नीकळ्जा करे छे.

[११] एवा पहाडोने ज्वालामुखी कहे छे.

[१२] पंजाबना कांगडा जील्लामां पण एक ज्वालामुखी पर्वत छे.

[१३] त्यां ज्वालादेवीनुं मंदिर छे.

(१४) वरसादना दिवसोमां पहाडो उपर घणी शोभा होयछे.

(१५) पर्वतोथी घणा लाभ छे.

(१६) पहाडोमांथी अमने पत्थर, धातु अने लाकडां मळेछे.

पाठ ३१. सूरज और तारे—सूरज अने तारा.

पूरबकी ओर—पूर्व तरफ

उजाला—अजवाळुं

सुहावनी—शोभायमान

निकलतेही—उगतांज

वही—तेज

रसीली—रसवाळी

सारी धरती पर—बधी पृथ्वी उपर

नाज—अनाज

चमकसे—प्रकाशथी

अँधेरेका—अंधारानु

किरनें—किरणो

इनमेंसे—आमांथी

[१] जुओ पूर्व तरफ सूरजना उगतांज रातनो दिवस थइ गयो.

[२] बधी पृथ्वीपर अंधारानु अजवाळुं थइ गयुं.

[३] सूरजज आपणने गरमी आपे छे.

[४] तेज आपणा खेतरमां अनाज अने बागमां फळोने पकवे छे.

[५] सवारमां सूरजनां किरणो केवां शोभायमान लागेछे.

[६] सूरजना नीकळवाना वखते आकाश केवुं सुंदर लागेछे.
[७] पक्षीओनी जूदी जूदी जातनी बोली केवी रसीली लागे छे.
[८] सुरजना प्रकाशथी दिवसे तारा संताइ जाय छे (देखाता नथी).
[९] तेज तारा अंधारी राते केवा सुंदर लागे छे.
[१०] छेटेथी तारा पासे पासेज देखाय छे.
[११] पण तेओ एक बीजाथी घणा छेटे छे.
[१२] कोइ कोइ आभांथी रातदिवस घूम्या करेछे [फरेछे].
[१३] कोइ जगाएथी एकज वखते त्रणं हजारथी वधारे तारा कोइ जोइ शकतुं नथी.

पाठ ३२. सूरज और हवाका झगडा—
सूरज अने हवानी तकरार.

झगडा—तकरार	भीग—पलळी
बटोही—वटेमार्गु	ठहरा—तकरार
पसीनेमें—परसेवामां	
जाँच के लिये—तपासमां, परिक्षा माटे	बेग बढता गया—जोर वधतुं गयुं
बली—बळवान	छायादार—छायडांवाळुं

[१] एक वखत सूरज अने हवा वच्चे ए वातनी तकरार थइ के बन्नेमां कोण बळवान छे.

[२] एनी परीक्षा माटे एक बीजामां ए ठर्युं के जे कोइ वटेमार्गुना लूगडां उतरावे ते घणो बळवान मणाय.

[३] एक दिवस एक माणस रस्तामां कपडां पहेरीने चाल्यो जतो हतो.

[४] पवन जोरथी वावा लाग्यो, पण जेम जेम हवानुं जोर वधतुं गयुं तेम तेम ते पोतानां शरीर उपर कपडां विंटाळतो गयो.

[५] हवानुं कांइ पण जोर चाल्युं नहि.

[६] एनी पछी सूरज पोतानो ताप फेलाव्यो.

[७] सूरजनी गरमीथी ते मूसाफर पलळी गयो.

[८] अने तेणे लूगडां उतारीने नांखी दीधां अने छांयडांवाळा झाडनी नीचे बेसी गयो.

[९] हवाए हार मानीने सूरजने पोतानाथी वधारे बळवान जाण्यो.

पाठ ३३ साँप—साप.

कई—जात जातना, विविध	ओस—झाकळ
खोखलोंमें—वखोलामां	इनमें—एमां

जाडेमें—झाडमां
भाग—नाशी जवुं
पुराने—जुनां
बिलोमे—दरोमां
जडमें—मूळमां
सडहरो—खंडेरो
घुसे—संताइने
थैलियाँ—कोथळीयो
विष—झेर
दहकते हुये—सळगतो
उनी—उननां
तीक्ष्ण—झेरी
जलादे—बाळीनांखे
केंचुली—कांचळी

(१) साप विविध रंगना होय छे. एमां काळो साप घणो भयंकर होय छे.

(२) साप घणुं करीने जुनां मकानोनां खंडेरो अने जुनां झाडोनी बखोलोमां रहे छे.

(३) झाडमां तेओ दरोमां संताइने बेसी रहे छे (तेओ) तापमां झाकळ चाटवा अने हवा खावाने नीकळे छे.

(४) वरसादमां दरोमां पाणी भराइ जवाना कारण (तेओ) बहार नीकळी आवे छे.

(५) अने घास तथा झाडीओमां रहेवा लागे छे.

(६) सापने पग होता नथी पण तेओ जल्दीथी नाशी शकेछे.

(७) एनी जीभ वचमांथी चीरायली होय छे.

(८) एना ताळवामां बे दांत छे.

(९) अने ए दांतना मूळमां नानी नानी कोथळीओ होय.छे

[१०] जेमां झेर भरायलुं रहे छे. काळा सापनुं झेर घणुं होय छे.

[११] तेना करडेला थोडा बचे छे. सौथी सारा उपाय आ छे के ज्यां साप करडे ते (जगा)ने सळगता कोयलाथी बाळी नांखवी अथवा कापीने त्यांनुं लोही काढी नांखवुं.

[१२] उनना अने रेशमी लूगडांमां एना कांचळी राखवाथी जीवडां लागतां नथी.

पाठ २४. मछलियाँ—माछलिओ.

अंडासें—इंडामांथी	नापा गया है—मापवामां आव्युं छे
इन्हीं—आज	छेद—काणां
सहारेसे—मददथी	परों—पांखो
तडप तडप—तफडी तफडी	तक्की—सुधीनी
गलफडा—फेफसां	बत्तियां—मीणबत्तीओ
देखनेमें—जोवामां	फेफरा—फेफसां
साँस—श्वास	
पैर—पग	

[१] माछलीओ इंडामांथी पेदा थाय छे अने पाणीमां रहे छे.

[२] तेओ पाणीमांथी नीकळतांज तफडी तफडीने मरी जाय छे.

[३] एमना गळामां श्वास लेवाने माटे कांणा होय छे.

(४) आज कांणाने फेफसां कहे छे.

(५) माछलीओने कान नथी होता पण तेओ सांभळी शकेछे.

(६) तेमने पग नथी होता पण तेओ पाणीमां पांखो अने पूंछडीनी मददथी चाले छे.

(७) एक जातनी माछलीनुं नाम व्हेल छे.

(८) ते संसारना सर्व जीवडांथी मोटी होय छे.

(९) तेनी लंबाइ आशरेथी पचास हाथ अने मोटाइ पण एटलीज होय छे.

(१०) पूंछडीनी लंबाइ आठ हाथ सुधी जोवामां आवी छे.

(११) तेनुं मोढुं चौद हाथ सुधी मापवामां आव्युं छे.

(१२) व्हेल तोलमां चार हजार मण सुधीनी आंकवामां आवीछे.

(१३) तेमां चरवी घणी होय छे, अने आनेज लीधे तेनो शिकार करवामां आवे छे.

(१४) चरवीनी मीणवत्तिओ बने छे. व्हेल इंडा आपती नथी.

(१५) बच्चु जणे छे, अने तेने दुध पीवाडे छे.

(१६) तेने श्वास लेवाने माटे परमेश्वरे फेफसां आप्यां छे.

(१७) एथीकरीने पाणीथी बहार माथुं कहाडीने श्वास लेछे.

(१८) एने समुद्रमां रहेवाने कारणे माछली कहे छे.

पाठ ३५. कुत्तेकी स्वामी भक्ति—कुतरानी स्वामी भक्ति.

महाजनका—शाहुकारका	भेंट—मेळाप
बहुतेरा—घणुंए	कुछभी—कंइपण
कागज—कागळ	बारबार—वारंवार
देना—देवुं	लौट आया—पाछो आव्यो
भौंकता रहा—भस्या कर्युं	संतुष्ट—राजी
चुका दिया—वाळी आप्युं	खुरचने—खोतरवा
ऋण—देवुं	गडे हैं—दटाया छे
गाडथा—दाटयो हतो	

(१) कोइने एक शाहुकारनुं घणुं देवुं थइ गयुं हतुं.
(२) तेनी पासे देवुं चुकववाने कंइ पण न हतुं.
(३) पण तेनी पासे एक कुतरो हतो.
(४) शाहुकार तेनेज लेवाने माटे राजी थइ गयो.
(५) तेणे कुतरो शाहुकारने सोंपी दीयो.
(६) केटलाक दिवस वीत्या पछी ते महाजनना घरमां चोर पेठा अने तेनो घणो माल उठावीने लइ गया.
(७) कुतराए घणुंज भस्या कर्युं, पण कोइनी आंख उघडी नहि.
(८) चोरोने जोइने कुतरो तेओनी पाछळ पडयो.
(९) अने ज्यां चोराए माल दाटयो हतो ते जग्याने जोइने पाछो आव्यो.

(१०) ज्यारे धणी जाग्यो, (त्यारे) कुतरो ते खेतरनी तरफ वारंवार जवा अने आववा लाग्यो.

(११) एक वखत मालीक तेनी पाछळ पाछळ गयो.

(१२) कुतरो खेतरमां जइने जे जग्याए माल दाटयो हतो त्यां पंजाथी माटी खोतरवा लाग्यो, अने शाहुकारने तेनुं धन बतावी दीधुं.

(१३) शाहुकार कुतराथी घणो राजी थयो.

(१४) तेणे एक कागळ उपर आवुं लख्युं के ' तमारा कुतराए तमारूं सघळुं देवुं वाळी आप्युं ' (ए प्रमाणे लखीने) कुतराना गळामां (ते) बांध्यो, अने तेना पहेला मालीकनी पासे मोकली दीधो.

(१५) रस्तामां मालीक अने कुतरानो मेळाप थइ गयो.

(१६) मालीक एवुं समज्यो के कुतरो शाहुकारने त्यांथी नाशी आव्यो छे.

(१७) (तेथी) तेने त्यांज तलवारथी मारी नांख्यो.

(१८) कुतराना मरी गया पछी तेणे ते कागळ तेना गळामां जोयो.

(१९) पछी तो ते पोताने संभाळी शक्यो नहि अने तेणे त्यां पोतानो पण प्राण आपी दीधो.

(२०) बंने एकज जगाए दटाया छे.

पाठ ३६. सोना-सोनुं.

खानसे-खाणमांथी	सोनार-सोनी
आँचसे-तापथी	गहने-घरेणां
फूंककर-खाख करीने	पत्र-पतरां
चमकीला-चळकतुं	सुहागे-खडीयो खार
धनी लोग-पैसादार लोक	खींचा जाता-खेंचाय छे
दाम-कींमत	आफ्रिकाके-आफ्रिकाना

(१) सोनुं खाणमांथी नीकळे छे, अने ते घणुं भारे अने चळकतुं होय छे.

(२) देवता उपर घणुं गरम करवाथी ओगळी जाय छे.

(३) सोनी सोनाने खडीया खारनी साथे गरम करे छे.

(४) आथी सोनुं थोडाज तापथी ओगळी जाय छे.

(५) पैसादार लोक एनां सारां सारां घरेणां बनावरावे छे.

(६) एना तार पण खेंचाय छे अने पतरां पण बनाववामां आवे छे.

(७) सोनानां पतरां दवाओमां काम आवे छे.

(८) वैद्य सोनानी खाख करीने दवाओ बनावे छे.

(९) आनी बहु किंमत थाय छे.

(१०) विलायतमां सोनाना सिकानुं चलण छे.

(११) आपणा देशमां पण एनी महोर बने छे.

(१२) सोनुं अमेरिका अने आफ्रिकाना पश्चिम भागमां बहु मळे छे.

(१३) कोइ कोइ नदीओनी रेतमां पण सोनुं मळे छे.

(१४) पणं तेने कहाडवामां खर्च बहु लागे छे.

पाठ ३७. चाँदी—चांदी.

मील ले सकते—खरीदी शकता	अठन्नी—आठ आनी, अर्धो
दुअन्नी—बे आनी	बरतन—वासण
सोहागे—खडीओखार	पाइजाती है—मळे छे
काँसेके—कांसानां	चवन्नी—चारआनी, पावली
मालदार—पैसादार	फूँकी—खाख
गलती है—ओगळे छे.	बहुतायतसे—वधारे

(१) चांदी पण सोनानी पेठे खाणमांथी नीकळे छे.

(२) पण ते सोनानी बराबर भारे होती नथी अने रंगमां धोळी होय छे.

(३) एनां पण घरेणां बनाववामां आवे छे.

(४) जे सोनुं खरीदी शकता नथी तेओ चांदीनां घरेणां बनावरावे छे.

(५) जेओने चांदी पण मळी शकता नथी तेओ कांखानां पहेरे छे

(६) हिंदुस्तानमां चांदीना रूपिया, अर्धा, पावली, अने बेआनी बने छे.

(७) पैसावाळा माणस खावाने माटे चांदीनां वासण पण बनावरावे छे.

(८) चांदीना तार पण खेंचवामां आवे छे अने एनां पतरां पण बनाववामां आवे छे.

(९) चांदीनी पण खाख करवामां आवे छे अने (ते) दवामां काम आवे छे.

(१०) चांदी खडीआ खारना साथे जलदी ओगळे छे.

(११) चांदी थोडी के वधारे सघळी जगाए मळे छे, पण अमेरिकामां वधारे मळे छे.

पाठ ३८. लोहा—लोढुं.

आँच—ताप	उडीसा—ओढीआ
जितना—जेटलुं	कुल्हाडी—कुहाडी
जान पडेगा—समजाशे	कंगाल—गरीब
इंगलिस्तात—इंगलांड	कुमाऊँमें—कमाउंमां
उतना—तेटलुं	फावडा—पावडा
धनि—धनवान	सबहीको—सर्वने

(१) लोढुं पण खाणमांथी नीकळे छे अने माटी अने पत्थरमां मळेलुं रहे छे.

(२) लोढाने ताप दइने चोक्खुं करे छे. लोढुं ईंग्लंडमां घणुं मळे छे.

(३) हिंदुस्तानमां पण बर्दवान, ओढीआ अने कुमाउंमां एनी खाणो छे.

(४) लोढाथी जेटलुं काम थाय छे, तेटलुं कोइ बीजी धातुथी थतुं नथी.

(५) लोढानी कलमो, चप्पु, कुहाडी, पावडा अने हथियार बने छे.

(६) विचार करीने जुओ तो समजाशे के लोढुं न होयतो आपणां घणां काम बंध पडी जाय.

(७) जे देशमां लोढानो उपयोग नथी ते देशमां उन्नति थती नथी.

(८) लोढानुं काम धनवान अने गरिब सर्वने पडे छे.

(९) एटला माटे लोढुं सघळी धातुओमां मुख्य गणाय छे.

पाठ ३९. मोर—मोर.

बादलों—वादळो	सुहावना—शोभायमान
उभरी—फूलेली	कलँगी—कलगी
हरियाली—लीलोतरी	लहलहाती—सुशोभित

जान पडता है—जणाय छे
परोंमें—पांखोमां
टहलता—फरतो
पूँछी—पूंछडी
तारेही तारे—ताराज तारा
गूँजने लगा—गाजी उठयुं
फूला—फूल
घमंड—अभिमान
गाँवों—गामो

(१) जुओ वादळोनी गरजना सांभळीने मोर सामेना खेतरमां नाचवा मंडयो छे, केवो शोभायमान जणायछे.

(२) पूंछडी केवी गोळ फेलावी दीधी छे.

(३) जाणे (के) सूरजमूखीनुं फूल खील्युं छे.

(४) गर्दन फूलेली छे, माथा उपर कलगी छे, पांखोमां ताराज तारा जडया छे.

(५) तेने पोतानी सुंदरतानुं घणुं अभिमान छे.

(६) तेनो जीव चहाय छे के सुंदर—शोभायमान जंगल हो, जमीन उपर लीलोतरी सुशोभित हो अने हुं धीरे धीरे फरतो रहुं.

(७) ज्यारे जीव चहाय (त्यारे) एक बे वार बोली उठ्यो, घणा दूर सुधी जंगल गाजी उठयुं.

(८) मोर देवळो अने गामोनी पासे रहे छे.

(९) सांजे (अने) सवारे खुल्लां मेदानो अने खेतरोमां घूम्या करे छे; राते झाडो उपर आराम ले छे.

(१०) रजवाडामां एओने मारवा देता नथी.

(११) एओनी पूंछडी अने पांखोनुं मोरछल बने छे.

पाठ ४०. आम—केरी.

लगे हैं—उग्यां छे	रुचता है—भावे छे
तोतोंके—पोपटनां	कब—क्यां
फुरसे—फरर करता	ढेर—ढगलो
घने—खीचोखीच	बौर—मोर
आ गिरे—आवी पड्यां	कूकी—टहुकी
बुढा—डोसो	पात पात—पांदडे पांदडे
रखा—रखवाळी	खटका—अवाज
कुतर कुतर—कोतरी कोतरी	सिधारी—जती रही

[१] सामे केवो सुंदर बाग छे. आंबानां झाड उग्यां छे.

[२] केवां खीचोखीच छे जेवी काळी घटा छाइ होय.

[३] रखवाळो आंबानी रखवाळी करी रह्या छे, पण खी-सकोलीओ क्यां छोडे छे.

[४] डाळीए डाळीए (अने) पांदडे पांदडे फरे छे.

[५] त्यो पोपटनां टोळे टोळां आवी पड्यां.

[६] (तेमणे) केरी कोतरी कोतरीने ढगलो बनावी दीधो

[७] अवाज थतांज सघळा फरर करता उडी गया

[८] केरी एक वरस सारी आवे छे, बीजी साल ओछी.

कोइ कोइ एक साल फळे छे.

[९] बीजी साल तेओमां फळ आवतां नथी.

[१०] अने कोइ कोइने बारे मास फळो आवे छे.

[११] गमे तो डोसो होय के जुवान (पण) केरी बधाने भावे छे.

[१२] केरी अने कोयलनी सोबत छे. झाड उपर मोर आव्यो अने कोयल टहुकी.

[१३] केरी थइ रही अने ते बीजा देशोमां जती रही.

[१४] केरी घणी जातनी होय छे. जेमके, पुंवाइ, माल्दा, लंगडा, टिकारी, मोहनभोग अने देशी.

हिन्दी व्याकरण संबंधी केटलीक जरूर पुरती माहिती. हिन्दीमां गुजरातीनी माफक आठ विभक्तिओ छे अने तेने कारक कहे छे.

कारक अथवा विभक्ति.

कर्त्ता	[पहेली]	अपादान	[पांचमी]
कर्म	[बीजी]	सम्बन्ध	[छट्ठी]
करण	[त्रीजी]	अधिकरण	[सातमी]
सम्पदान	[चोथी]	सम्बोधन	[आठमी]

विभक्त.	कारक.	गुजराती प्रत्यय.	हिन्दी प्रत्यय.
१ ली	कर्त्ता (कर्त्ता अर्थे)	मूल रूप रहे छे.	मूळरूप अथवा ने
२ जी	कर्म (कर्म अर्थे)	ने	को
३ जी	करण (साधन)	ए	से
४ थी	सम्प्रदान (दान)	ने माटे, ने वास्ते	को, के लिये
५ मी	अपादान वियोग	थी, थकी.	से
६ ठी	सम्बन्ध (संबंध)	नो, नी, नुं, नां, ने	का, की, के
७ मी	अधिकरण स्थान	मां, ए	मे, पै, पर
संबोधन	संबोधन (कोइने) बोलाववामां वपराय छे.	प्रत्यय नथी पण गुजरातीनी माफक शब्दनी आगळ के पाछळ हो, रे, अरे, हे मूकवामां आवे छे.	

विभक्तिओना संबंधथी थतां नामनां रूपाख्यान.

अकरान्त पुल्लिंग. बालक शब्द.

	एकवचन.	बहुवचन.
१ कर्ता	बालक, बालकने	बालक, बालकोंने
	बाळक, बाळके	बाळको, बाळकोए
२ कर्म	बालकको	बालकोंको
	बाळकने	बाळकोने
३ करण	बालकसे	बालकोंसे
	बाळके	बाळकोए
४ सम्प्रदान	बालको, बालककेलिये	बालकोंको, बालकोंकेलिये

बाळकने, बाळकने माटे, बाळकोने, बाळकोने माटे
५ अपादान बालकसे (बाळकथी) बालकोंसे (बाळकोथी)
६ सम्बन्ध बालकका—की—के बालकोंका—की—के
बाळकनो—नी—नां बाळकोनो—नी—नां
७ अधिकरण बालकमें—पै—पर बालकोंमें—पै—पर
बाळकमां—पर—उपर बाळकोमां, बाळकोपर—उपर
८ सम्बोधन हे बालक (हे बाळक) हे बालकों (हे बाळको)

अकरान्त स्त्रीलिंग चील (समळी) शब्द.

एकवचन.		बहुवचन.
१ कर्ता	चील (समळी)	चीलें (समळीओ)
२ कर्म	चीलको (समळीनें)	चीलोंको (समळीओने)

बाकीनां रुप " बालक " शब्दनां रुप प्रमाणे बने छे.

आकारान्त पुल्लिंग. लडका शब्द.

एकवचन.		बहुवचन.
१ कर्ता	लडका, लडकेने छोकरो, छोकराए	लडके, लडकोंने छोकराओ, छोकराओए
२ कर्म	लडकेको (छोकराने)	लडकोंको (छोकराओने)
३ करण	लडकेसे (छोकराए)	लडकोंसे (छोकराओए)
४ संप्रदान	लडकेको, लडके के लिये (छोकराने, छोकराने माटे)	लडकोंको, लडकोंके लिये छोकराओने, छोकराओने माटे)
५ अपादान	—लडकेसे छोकराथी)	लडकोंसे (छोकराओथी)

६ संबंध लडकेका—की—के लडकोंका—की—के
(छोकरानो—नी—नां) (छोकराओनो—नी—नां)

७ अधिकरण—लडकेमें—पै—पर लडकोंमें—पै—पर
(छोकरामां—पर—उपर) छोकराओमां—पर—उपर

८ संबोधन—हे लडके (हे छोकरा) हे लडको (हे छोकराओ)

अकारान्त स्त्रीलिंग 'गैया' शब्द.

ए. व.	ब. व.
१ कर्ता गैया, गैयाने (गाय, गाये)	गैया, गैयाओने (गायो, गायोए)
२ कर्म—गैयाको (गायने)	गैयाओंको (गायोने)

बाकीना रुप लडका शब्द प्रमाणे करवां.

ह्रस्व इकारान्त पुल्लिंग "हरि" शब्द.

एकवचन.	बहुवचन.
१ हरि, हरिने	हरि, हरियोंने
२ हरिको	हरियोंको
३ हरिसे	हरियोंसे
४ हरिको—के लिये	हरियोंको, हरियोंके लिये
५ हरिसें	हरियोंसे
६ हरिका—की—के	हरियोंका—की—के
७ हरिमे—पै—पर	हरियामे—पै—पर
८ हे हरि	हे हरियों

ऱ्हस्व इकारान्त स्त्रीलिंग 'बुद्धि' शब्द.

एकवचन.	बहुवचन,
१ बुद्धि, बुद्धिने	बुद्धियां, बुद्धियांने
२ बुद्धिको	बुद्धियोंको

बाकीनां रूप "हरि" शब्द प्रमाणे थाय छे.

१ माली, मालीने	माली, मालीयोंने
२ मालीको	मालीयोंको
३ मालीसे	मालियोंसे
४ मालिको-के लिये	मालियोंको-के लिये.
५ मालिसे	मालियोंसे
६ कालिका—की—के	मालियोंका—को—के
७ मालिसे—पै—पर	मालियोंमे—पै—पर
८ हे मालि	हे मालियो

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग "घोडी" शब्दनां रूप पण उपर प्रमाणे थाय छे, परंतु पहेली विभक्तिना बहुवचनमां "घोडियां" रूप थाय छे बांकीनां रूप "मालि" प्रमाणे.

ऱ्हस्व उकारान्त पुलिंग "साधु" शब्द.

एकवचन.	बहुवचन.
१ साधु, साधुनें	साधु, साधुओने
२ साधुको	साधुओंको

बाकीनां रूप एकवचनमां "साधु" अने बहुवचनमां 'साधुओ' ने अनुक्रमे प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे.

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिंग "धेनु" शब्दनां रूप साधु शब्द प्रमाणे करवां.

दीर्घ उकारान्त पुल्लिंग 'भालू' (रीछ) शब्द.

ए.	ब.
१ भालू, भालूने	भालू भालूओंने
२ भालूको	भालूओंको
३ भालूसे	भालूओंसे
४ भालूको—के लिये	भालूओंको—के—लिये
५ भालूसे	भालूओंसे
६ भालूका—की—के	भालूओंका—की—के
७ भालूमें	भालूओंमें
८ हे भालू	हे भालूओं

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिंग "झाडू" (कचरो) शब्दोनां रूप उपर प्रमाणेज थाय छे.

एकरान्त पुल्लिंग 'पांडे' (पंडया) शब्द.

१ पांडे, पांडेने	पांडे, पांडेओंने
२ पांडेको	पांडेओंको
३ पांडेसे	पांडेओंसे

बाकीना रूप एकवचनमां " पांडे " अने बहुवचनमां " पांडिओं " ने प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे.

ओकारान्त पुल्लिंग " कोदो " (सामो नामनुं अनाज).

ए. व.	शब्द	ब. व.
१ कोदो, कोदोने		कोदो, कोदोओंने
२ कोदोको		कोदोओंको
३ कोदोसे		कोदोओंसे

बाकीना रूप (एकवचनमां कोदो अने बहुवचनमां " कोदोओं " ने प्रत्ययो लगाडवाथी थाय छे.

सर्वनाम.

हिन्दी भाषामां सर्वनाममां नर ने नारी जातिना एकज रूप रहे छे.

पुरुषवाचक सर्वनाम अने तेनां विभक्तिनां रुप.

गुजराती			हिन्दी		
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	बहुवचन
१ लो पु	हुं	अमे, आपणे	उत्तम पुरुष	मैं	हम, आप
२ जो पु.	तुं	तमे, आप	मध्यम पुरुष	तू	तुम, आप
३ जो पु.	ते	तेओ	अन्य पुरुष	वह	वे

उत्तम पुरुष मैं—पहेलो पुरुष " हुं " नां रूप.

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं, मैंने [हुं, में]	हम, हमने (अमे, अमोए, आपणे)
कर्म	मुझको, मुझे [मने]	हमको, हमें [अमने]

करण मुझसे, मैने (माराथी में) हमने, हमसे (अमे, अमोए)
संप्रदान मुझको, मुझे मेरे लिये हमको, हमें, हमारे लिये
(मने, मारे माटे) (अमने, अमारे माटे)
अपादान मुझसे (हुंथी, माराथी) हमसे (अमथी, अमाराथी)
संबंध मेरा-री-रे (मारो-री-रां) हमारा-री-रे (अमारो-री रां)
अधिकरण मुझमें, मेरेमें (मारामां) हममें, हमारेमें (अमोमां, अमारामां) सर्वनामना संबोधनना रूपाख्यान थइ शकतां नथी.

मध्यम पुरुष तू—(बीजो पुरुष " तुं")

ए. व.	ब. व.
१ तू, तूने (तुं, तें)	तुम-तुमने (तमे, तमोए)
२ तुझको, तुझ (तने)	तुमको, तुम्हें (तमने)
३ तुझसे, तने (ताराथी, तें)	तुमने, तुमसे (तमे, तमोए, तमारे)
४ तुझको, तुझे, तेरे लिये (तने, तारे माटे)	तुमको, तुम्हें, तुम्हारे लिये (तमने, तमारा माटे)
५ तुझसे, (तुंथी, ताराथी)	तुमसे (तमाराथी)
६ तेरा, तेरी, तेरे (तारो-री-रां)	तुम्हारा-री-रे (तमारो-रा-रां)
७ तुझमें, तेरेमें (तुंमां, तारामां)	तुममें, तुम्हारेमें (तमारामां)

अन्य पुरुष "वह" (त्रीजो पुरुष ' ते ')

एकवचन.	बहुवचन.
१ वह, उसने (ते, तेणे)	वे, उनने, उन्होंने(तेओ, तेओए)

२ उसको, उसे (तेने) उनको, उन्हे उन्हे उन्होंको[तमने तेओने]

३ उससे, उसने [तेथी,तेणे] उनसे, उन्होसे, उनने (तेओए, तेओथी, तेमणे)

४ उसको, उसे, उसके लिये उन्होंको,उनके लिअे (तेओने, (तेने, तेने माटे) तेओने माटे)

५ उससे (तेथी) उनसे, जन्होंसे(तेओथी तेमनाथी)

६ उनका-की के(तेनो नी-नां) उनका-की-के, उन्होंका-की-के (तेओनो-नी-नां)

७ उसमें, उसपर (तेनामां-पर) उनमें,उन्होमें उनपर, जन्हों-पर (तेओमां-पर, तमनामां)

दर्शक सर्वनाम.

यह (आ).

एकवचन.	बहुवचन.
१ यह,इसमे(आ,आणे)	ये,इनने,इन्होंने(आ,आणे,आमणे)
२ इसको, इसे [आने]	इतको, इन्हें (आने, आमने]
३ इससे (आणे)	इनसे, इन्होंसे (आणे, आमणे)
४ इसको,इसे,इसके लिये (आने, आने माटे)	इनको इनके लिये (आने, अमने माटे)
५ इससे (आथी)	इनसे, इन्होंसे (आथी, आमनाथी)

६ इसका-की-के(आनो-नी-नां) इनका-की-के(आमनो-नी-नां)
७ इसमें (आमां) इनमें इन्होंमे (आमां, आमनामां)
सामान्य सर्वनाम—"कोइ" एकवचनमांज वपराय छे.
१ कोई, किसीने (कोइ कोईए) ५ किसीसे (कोईथी)
२ किसीको (कोईने) ६ किसीका-की-के (कोइनो-नी-
३ किसीसे, किसीने (कोईए,कोईथी) नां)
४ किसीको किसीके लिये ७ किसीमें (कोईमां)
[कोईने, कोईने माटे]

प्रश्नार्थक सर्वनाम—कान [कोण]

एकवचन. बहुवचन.
१ कौन, किसने (कोण, कोण) कान, किनने (कोण, केणे)
२ किसको, किसे (कोने,केने) किनको, किन्हें
३ किससे, किसने (कोणथी,कोणे) किनसे (लिये
४ किसको, किसे, किसके लिये किनको, किन्हें, किनके
(कोने, केने, कोने माटे)
५ किससे (केनाथी, कोनाथी) किनसे
६ किसका-की-के (कोनो, किनका-की-के
केनो-नी-नां)
७ किसमें, किसपर (कोनामां, केनामां) किनमें, किनपर

प—कोण शब्दनुं गुजरातीमां बहुवचन थतुं नथी माटे बहुवचनमां गुजराती रुप लख्यां नथी.

आप (आप).

हिन्दीमां एकवचननां रुपमां वपराय छे, पण अर्थ बहु-वचननो बतावे छे. गुजरातीमां आप बहुवचनमां रहे छे.

१ आप, आपने (आप, आपे)	५ आपसे (आपथी)
२ आपको (आपने)	६ आपका-की- के(आपनो-नी-नां)
३ आपसे, आपने (आपथी, आपे)	
४ आपको, आपके लिये (आपने, आपने सारुं)	७ आपमें (आपमां)

*आप (आपणे).

१ आप (आपणे)	५ अपनेसे (आपणाथी)
२ अपनेको (आपणने)	६ अपना-नी-ने(आपणो)-णी–णां)
३ अपने, अपनेसे(आपणे-आपणाथी)	
४ अपनेको, अपने लिये (आपणने, आपणे सारु)	७ अपनेमें (आपणामां)

जौन (जे).

एकवचन.	बहुवचन.
१ जो, जिसने [जे जेणे]	जो, जिनने [जे, जेणे, जेओए]
२ जिसे, जिसको (जेने)	जिन्हें, जिनको (जेने, जेओने)
३ जिससे, जिसने(जेथी, जेणे)	जिनने, जिनसे (जेमणे, जेनाथी)
४ जिसे, जिसका, जिसके लिये (जेने, जेने माटे)	जिनको, जिन्हें, जिनके लिये (जेमने, जेमने माटे)

---

*आप हिन्दीमां एकवचनमां वपराय छे, पण अर्थ बहुवचनो बतावे छे, अने गुजरातीमां ते बहुवचनमांज वपराय छे.

५ जिससे [जेथी] जिनसे [जेओथी]

६ जिसका-की-के जिनका-की-के } [जेओना-नी-नां]
[जेनो-नी-नां] जिन्होंका की-के }

७ जिसमें [जेमां] जिनमें [जेओमां]

"हो" धातुनां वर्तमानकाळनां रुप.

पुरुष	एक.	बहु.
१ उत्तम	में हुं [हुं छुं]	हम हैं [अमे छीए]
२ मध्यम	तू है [तुं छे]	तुम हो [तमे छो]
३ अन्य	वह है [ते छे]	वे हैं [तेओ छे]

हो धातु नरजाति भुतकाळनां रुप.

पुरुष.	एकवचन.	बहुवचन.
१ उत्तम	मै था [हुं हतो]	हम थे [अमे हता]
२ मध्यम	तू था [तुं हतो]	तुम थे [तमे हता]
३ अन्य	वह था [ते हतो]	वे थे [तेओ हता]

हो धातु नारिजाति भूतकाळना रुप.

१ उत्तम	मै थी [हुं हती]	हम थी [अमे हती]
२ मध्यम	तू था [तुं हती]	तुम थी [तमे हती]
३ अन्य	वह थी [ते हती]	वे थी [तेओ हता]

हो धातु भविष्यकाळ नरजातिनां रुप.

२ उत्तम मैं होउंगा } हुं होईश हम होवेंगे } [अमे होईशुं]
मैं हूंगा } हम होंगे }

२ मध्यम तूं होवेगा तुं होगा	तुं होईश	तुम होओगे तुम होंगे	[तमे हशो]
३ अन्य वह होवेगा वह होगा	[ते हशे]	वो होवेगे वे होगे	[तेओ हशे]

हो धातु नारीजाति भविष्यकाळना रुप*

१ उत्तम	मैं होऊंगी	हम होंगी
२ मध्यम	तूं होगी	तुम होंगी
३ अन्य	वह होगी	वे होगी

"पढ" धातु वर्तमानकाळ नरजातिना रूप.

पुरुष.	एकवचन.	बहुवचन.
१ उत्तम	मैं पढताहु[हुं भणुं छुं]	हम पढतेहैं [अमे भणीए छीए]
२ मध्यम	तू पढताहै[तुं भणे छे]	तम पढतेहों[तमे भणो छो]
३ अन्य	वह पढताहै[ते भणे छे]	वे पढते हैं [तेओ भणे छे]

पढ धातु वर्तमानकाळ नारी जाति.

१ उत्तम मैं पढता हुं (आगळना गुजराती प्रमाणे) हम पढत हैं [आगळना गुजराती प्रमाणे]

---

* १ गुजरातीमां कर्त्ता पुरुष अने स्त्री बन्ने माटे एकज रूप रहे छे.

२ हिन्दी भाषामां गुजरातीनी माफक नान्यतरजाति नथी.

२ मध्यम तु पढती है (,,) तुम पढती हो (,,)

३ अन्य वह पढती है (,,) वे पढती हैं (,,)

"पढ" धातु भूतकाळ नरजाति.

१ उत्तम मैं पढताथा [हुंभणतोहतो]हमपढतेथे [अमेभणताहता]

२ मध्यम तू पढताथा [तुंभणतोहतो]तुमपढतेथे[तमे भणताहता]

३ अन्यवह पढताथा (तेभणतोहतो)वे पढतेथे [तेओभणताहता]

"पढ" धातु भुतकाळ नारिजाति.

१ उत्तममैंपढतीथी(हुंभणतीहती)हमपढतीथी (अमे भणती हती)

२ मध्यमतुपढतीथी(तुंभणतीहती)तुमपढतीथी[तमे भणती हती]

३ अन्यवहपढतीथी(तेभणतीहती)वे पढतीथी (तेओ भणतीहती)

"पढ" धातु भविष्यकाळ नरजाति.

१ उत्तम मैं पढूंगा (हुं भणीश) हम पढेंगे (अमे भणीशुं)

२ मध्यम तू पढेगा (तुं भणीश) तुम पढोगे (तमे भणशो)

३ अन्य वह पढेगा (ते भणशे) वे पढेंगे (तेओ भणशे)

"पढ" धातु भविष्यकाळ नारिजाति.

१ उत्तम मैं पढूंगी (गुजराती उपर प्रमाणे) हम पढेंगी (गुजराती उपर प्रमाणे)

२ मध्यम तु पढेगी (,,) तुम पढोगी (,,)

३ अन्य वह पढेगी (,,) वे पढेंगी (,,)

સૂચના.

અમારે ત્યાંથી આ રાજ્યની શાળાઓમાં ચાલતાં ગુજરાતી ઇંગ્રેજી વિગેરે તમામ પુસ્તકો તથા સ્ટેશનરી સામાન મળે છે. જથ્થાબંધ લેનારને સારૂં કમીશન આપવામાં આવશે. બહારગામના ઓર્ડરપર પુરતું ધ્યાન આપવામાં આવશે.

અમારા તરફથી પ્રગટ થએલાં પુસ્તકો.

	કિંમત. રૂ. આ.
૧. ગુ. બીજા ધોરણની નોટ. (આ રાજ્યના નવા ધોરણ પ્રમાણે તમામ વિષયો સાથ)	૦—૩—
૨. ગુ. ત્રીજા ધોરણની નોટ.	૦—૬—
૩. ગુ. ચોથા ધોરણની નોટ.	૦—૮—
૪. ગુ. પાંચમા ધોરણની નોટ.	૦—૧૦—
૫ ગુ. છઠ્ઠા ,, ,,	૦—૧૨—
૬. હિન્દી પ્રાઇમર તથા શિક્ષાવળી ભાગ ૧ લાના અર્થ તરજુમા સહિત.	૦—૩—૬
૭. હિન્દીશિક્ષાવલી ભાગ ૨ જાના અર્થ તરજુમા સહિત	૦—૪—૦
૮. પ્રશ્નોત્તરરૂપે હિન્દુસ્તાન ધો. ૧ લું. આવૃત્તિ ૨ લી	૦—૧—૦
૯. ,, ,, ,, ૨ જું. ,, ૩ જી	૦—૧—૦
૧૦. ,, ,, ,, ૩ જું. ,, ,,	૦—૨—૦
૧૧. ,, ,, ,, ૪ થું. ,, ,,	૦—૨—૦
૧૨. ,, ,, ,, ૫ મું. ,, ,,	૦—૨—૬
૧૩. ,, ,, ,, ૬ ઠું. ,, ૨	૦—૨—૬
૧૪. ,, ,, ,, ૭ મું. ,, ૧ લી	૦—૪—૬
૧૫. પ્રશ્નોત્તરરૂપે વડોદરા રાજ્યનો સરળ ઇતિહાસ	૦—૩—૦
૧૬. ભરતખંડનો પ્રશ્નોત્તરરૂપે સરળ ઇતિહાસ ધો. ૫ માટે	૦—૨—૦
૧૭. ,, ,, ,, ધો. ૬ માટે	૦—૩—૦
૧૮. પ્રશ્નોત્તરરૂપે નાગરિકનાં ધર્મ તથા આરોગ્યવિદ્યા	૦—૩—૦

પત્રવ્યવહાર નીચેના સિરનામે કરવો:—

મણીલાલ મૂળજીભાઈ ઉપાધ્યાય.
બુકસેલર એન્ડ પબ્લીશર.
મુ. પેટલાદ—તાબા આણંદ.